

सहजानंद शास्त्रमाला

लघु जीवस्थान चर्चा

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी “सहजानन्द” महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास
गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

जीवस्थान यचा



श्री १०५ शुल्लक मनोहर जी वर्णी
श्री मत्समहजानन्द जी महाराज



सहजानन्द शास्त्रमाला



नमः सिद्धेभ्यः

(अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री १०५ क्षु० मनोहरजी वरणी
'सहजानन्द' महाराज द्वारा विरचित)

लघु जीवस्थानचर्चा

जीवस्थानचर्चा में से सक्षिप्त किये गये २६ स्थान :-

- (१) गुणस्थान १४, (२) जीवसमास १४, (३) पर्याप्ति ६,
- (४) प्राण १०, (५) संज्ञा ४, (६) गति मार्गणा ५ (४+१)
- (७) इन्द्रियजातिमार्गणा ६ (५+१), (८) कायमार्गणा ७ (६+१),
- (९) योगमार्गणा १६ (१५+१), (१०) वेदमार्गणा ४ (३+१),
- (११) कषायमार्गणा २६ (२५+१), (१२) ज्ञानमार्गणा ८ (५+३),
- (१३) संयममार्गणा ८ (५+१+१+१), (१४) दर्शनमार्गणा ४,
- (१५) लेख्यामार्गणा ७ (६+१), (१६) भव्यत्वमार्गणा ३ (२+१)
- (१७) सम्यक्त्वमार्गणा ६ (३+१+१+१)
- (१८) मंजित्वमार्गणा ३ (२+१), (१९) आहारकमार्गणा २
- (२०) उपयोग २, (२१) ध्यान १६, (२२) आश्रव ५७, (२३) भाव ५३
- (२४) अवगाहना, (२५) जाति ८४ लाख, (२६) कुल १६७॥ लाखकोटि

गुणस्थान

गुणस्थान—मोह व योगके निमित्तसे होनेवाली आत्माके सम्यक्त्व और चारित्र गुणोंकी अवस्थाओंको गुणस्थान कहते हैं। गुणस्थान १४ होते हैं—

१ मिथ्यात्व, २ सासादनसम्यक्त्व, ३ मिश्रसम्यक्त्व, (सम्यग्मिथ्यात्व), ४ अविरत सम्यक्त्व, ५ देशविरत, ६ प्रमत्तविरत, ७ अप्रमत्तविरत व अपूर्वकरण (उपशमक व क्षपक), ८ अनिवृत्तिकरण (उपशमक व क्षपक) १० सूक्ष्मसम्पराय, (उपशमक व क्षपक), ११ उपशान्त मोह, १२ क्षीण मोह, १३ सयोगकेवली, १४ अयोगकेवली।

(१) मिथ्यात्व—मोक्षमार्गके प्रयोजनभूत जीवादि ७ तत्त्वोंमें यथार्थ अद्वान न होनेको मिथ्यात्व कहते हैं। मिथ्यात्वमें जीव देहको आत्मामानता है तथा अन्य भी परादार्थोंका अपना मानता है, कषाय परिणामोंसे भिन्न ज्ञानमात्र आत्माका अनुभव नहीं कर सकता है।

(२) सासादनसम्यक्त्व - उपशमसम्यक्त्व नष्ट हो जानेपर मिथ्यात्व का उदय न आ पाने तक अनन्तानुबन्धी कषायके उदयसे जो अयथाथ भाव रहता है उसे सासादनसम्यक्त्व कहते हैं।

(३) सम्यग्मिथ्यात्व—जहाँ ऐसा परिणाम हो जो न केवल सम्यक्त्व रूप हो और न केवल मिथ्यात्वरूप हो, किन्तु मिला हुआ हो उसे सम्यग्मिथ्यात्व कहते हैं।

(४) अविरतसम्यक्त्व—जहाँ सम्यग्दर्शन तो प्रकट हो गया हो, किन्तु किसी भी प्रकार का व्रत (संयमासंयम या संयम) न हुआ हो उसे अविरत सम्यक्त्व कहते हैं। इस गुणस्थानमें उपशमसम्यक्त्व, वेदकसम्यक्त्व, श्रायिकसम्यक्त्व ये तीनों प्रकारके सम्यक्त्व हो सकते हैं।

(५) देशविरत—जहाँ सम्यग्दर्शन भी प्रकट हो गया हो और संयमा-

संयम भी होगया हो उसे देशविरत कहते हैं ।

(६) प्रमत्तविरत—जहां महाव्रतका भी धारण हो चुका हो, किन्तु संज्वलन कषायका उदय मंद न होने से प्रमाद हो वह प्रमत्तविरत है ।

(७) अप्रमत्तविरत—जहां संज्वलनकषायका उदय मंद होनेसे प्रमाद नहीं रह्य उसे अप्रमत्तविरत कहते हैं । इसके दो भेद हैं १ स्वस्थान अप्रमत्तविरत, २ सातिशय अप्रमत्तविरत । स्वस्थान अप्रमत्तविरत वे कहलाते हैं, जो श्रेणि में नहीं चढ़ सकेंगे तथा सातिशय अप्रमत्तविरत वे कहलाते हैं, जो श्रेणिमें याने अष्टम गुणस्थान में चढ़ जावेंगे किन्तु अभी सातवें गुणस्थान में हैं । स्वस्थान अप्रमत्तविरत मुनि छठवें गुणस्थानमें पहुंचते हैं और इस प्रकार छठेसे सातवें में, सातवें से छठे में परिणाम आते जाते रहते हैं ।

सातिशय अप्रमत्तविरत मुनिके अधःकरण परिणाम होते हैं । वे यदि चारित्र्यमोहनीयका उपशम प्रारम्भ करते हैं तो उपशम श्रेणि चढ़ते हैं और यदि क्षय प्रारम्भ करते हैं तो क्षयश्रेणि चढ़ते हैं । सो वे दोनों (उपशम या क्षय श्रेणि चढ़नेवाले मुनि) आठवें गुणस्थान में पहुंचते हैं ।

सातिशय अप्रमत्तविरत मुनिके परिणामका नाम अधःकरण इसलिये है कि इसके कालमें विविधित समयवर्ती मुनिके परिणामके सदृश कुछ पूर्व-उत्तरसमयवर्ती मुनियोंके परिणाम हो सकते हैं ।

(८) अपूर्वकरण—इस गुणस्थानमें अगले-अगले समयमें अपूर्व-अपूर्व परिणाम होते हैं । ये उपशमक व क्षयक दोनों तरह के होते हैं । इस परिणामका अपूर्वकरण नाम इसलिये भी है कि इसके कालमें समानसमयवर्ती मुनियोंके परिणाम सदृश भी हो जायें, किन्तु विविधित समयसे भिन्न (पूर्व या उत्तर) समयवर्ती मुनियों के परिणाम विसदृश ही होंगे ।

इस गुणस्थानमें (१) प्रतिसमय अनन्तगुणी विशुद्धि होती है, (२) कर्मोंकी स्थिति का घात होने लगता है (३) स्थितिबन्ध कम हो जाते हैं, (४)

बहुतसा अनुभाग नष्ट हो जाता है, (५) असंख्यातगुणी प्रदेश निर्जरा होती है, और (६) अशुभप्रकृतियां शुभ में बदल जाती हैं ।

(९) अनिवृत्तिकरण इस गुणस्थान में चढ़ते हुये अधिक विशुद्ध परिणाम होते हैं, ये उपशमक व क्षपक दोनों प्रकारके होते हैं । इस परिणाम का अनिवृत्तिकरण नाम इसलिये है कि इसके कालमें विविक्षित समयमें जितने मुनि होंगे सबका समान ही परिणाम होगा । यहां भी भिन्न समय वालोंके परिणाम विसदृश ही होंगे । इस गुणस्थानमें चारित्रमोहनीयकी २० प्रकृतियोंका (अप्रत्याख्यानावरण ५, प्रत्याख्यानावरण ४, संज्वलन ३ हास्यादि ९) उपशम या क्षय हो जाता है ।

(१०) सूक्ष्मसाम्पराय—नवमें गुणस्थान में होनेवाले उपशम या क्षय के बाद जब केवल संज्वलन सूक्ष्मलोभ रह जाता है, ऐसा जीव सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती कहा जाता है, इस गुणस्थानमें सूक्ष्मसाम्परायचारित्र होता है जिसके द्वारा अन्तमें इस गुणस्थानवाला जीव सूक्ष्म लोभका भी उपशम या क्षय कर देता है ।

(११) उपशान्तमोह—समस्त मोहनीय कर्म का उपशम हो चुकते ही जीव उपशान्तमोहगुणस्थानवर्ती हो जाता है । इस गुणस्थानमें यथाख्यात चारित्र हो जाता है, किन्तु उपशम का काल समाप्त होते ही दशवें गुणस्थानमें गिरना पड़ता है या मरण हो तो चौथे गुणस्थानमें एकदम आना पड़ता है ।

(१२) क्षीणमोह—क्षपकश्रेणिसे चढ़ने वाला मुनि ही समस्त मोहनीयके क्षय होते ही क्षीणमोहगुणस्थानवर्ती हो जाता है । इस गुणस्थान में यथाख्यातचारित्र हो जाता है तथा इसके अन्त समयमें ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायकर्मका भी क्षय हो जाता है । (क्षपकश्रेणि से चढ़ने वाला मुनि ग्यारहवें गुणस्थानमें नहीं जाता है, वह दशवें गुणस्थानसे बारहवें गुणस्थानमें आजाता है)

(१३) सयोगकेवली—चारों घातिया कर्मके नष्ट होते ही यह आत्मा

सकल परमात्मा हो जाता है। इन केवली भगवानके जब तक योग रहता है तब तक उन्हें सयोगकेवली कहते हैं। इनके बिहार भी होता है, दिव्य-ध्वनि भी खिरती है। तीर्थङ्कर सयोगकेवली के समवशरणकी रचना होती है, सामान्य सयोगकेवलीके गन्धकुटीकी रचना होती है। इन सबका नाम अर्हन्त परमेष्ठी भी है। अन्तिम अन्तर्मुहुर्त में इनके बादर योग नष्ट होकर सूक्ष्म योग रह जाता है और अन्तिमसमयमें यह सूक्ष्म योग भी नष्ट हो जाता है।

(१४) अयोगकेवली — योगके नष्ट होते ही ये परमात्मा अयोगकेवली हो जाते हैं। शरीरके क्षेत्रमें रहते हुए भी इनके प्रदेशोंका शरीरसे सम्बन्ध नहीं रहता। इनका काल 'अ इ उ ऋ लृ' इन पांच ह्रस्व अक्षरोंके बोलनेके बराबर रहता है। इस गुणस्थान में उपान्त्य और अन्त्य समयमें शेष बची हुई ७२ और १३ प्रकृतियोंका क्षय हो जाता है। इसके बाद ही ये प्रभु गुणस्थानातीत सिद्ध भगवान हो जाते हैं।

जीवसमास

जीवसमास—जिन सद्दश धर्मों द्वारा अनेक जीवोंका संग्रह किया जा सके उन सद्दश धर्मोंका नाम जीव समास है। ये १४ होते हैं—

१. एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त, २. एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्त, ३. एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त, ४. एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त, ५. द्वीन्द्रिय पर्याप्त, ६. द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, ७. त्रीन्द्रिय पर्याप्त, ८. त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, ९. चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, १०. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, ११. असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, १२. असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, १३. संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, १४. संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त।

१. एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त—जिन जीवोंके स्पर्शन इन्द्रिय है तथा बादर शरीर (जो दूसरे बादरको रोक सके और जो दूसरे बादरसे रुक सके) है और जिनकी शरीर पर्याप्ति भी पूर्ण होगई है वे एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त हैं। ये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति रूप पांच प्रकारके होते हैं।

२. एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्त—एकेन्द्रिय बादरोंमें उत्पन्न होने वाले जीव, उस आयुके प्रारम्भसे लेकर जब तक उनकी शरीरपर्याप्ति पूर्ण नहीं होती, बादर अपर्याप्त कहलाते हैं। इनमेंसे जो जीव ऐसे हैं कि जो पर्याप्ति पूर्ण न कर सकेंगे और मरण हो जाएगा उन्हें लब्धपर्याप्त कहते हैं जिनकी पर्याप्ति पूर्ण अभी तो नहीं हुई, परन्तु पर्याप्ति पूर्ण नियम से करेंगे उन्हें निवृत्यपर्याप्त कहते हैं। इन जीवसमाप्तोंमें अपर्याप्त शब्दसे दोनों अपर्याप्तोंका ग्रहण करना चाहिये।

३. एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त—जो जीव एकेन्द्रिय हैं, सूक्ष्म (जिनका शरीर न दूसरेको रोक सकता और न दूसरेसे रुक सकता व सूक्ष्म नाम कर्म का जिनके उदय है) एवं पर्याप्त हैं उन्हें एकेन्द्रिय सूक्ष्म पर्याप्त कहते हैं।

४. एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त—एकेन्द्रिय, सूक्ष्म, अपर्याप्त जीवोंको एकेन्द्रिय सूक्ष्म अपर्याप्त कहते हैं।

५. द्वीन्द्रिय पर्याप्त—जिनके स्पर्शन रसना ये दो इन्द्रिय हैं तथा जो पर्याप्त हो चुके हैं उन्हें द्वीन्द्रिय पर्याप्त कहते हैं।

६. द्वीन्द्रिय अपर्याप्त—उन द्वीन्द्रिय जीवोंको जो लब्धपर्याप्त हैं या अभी निवृत्यपर्याप्त हैं, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

७. त्रीन्द्रिय पर्याप्त—जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण ये तीन इन्द्रिय हैं और जो पर्याप्त हो चुके हैं, उन्हें त्रीन्द्रिय पर्याप्त कहते हैं।

८. त्रीन्द्रिय अपर्याप्त—उन त्रीन्द्रिय जीवोंको जो लब्धपर्याप्त या अभी निवृत्यपर्याप्त हैं, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

९. चतुरिन्द्रिय पर्याप्त—जिन जीवोंके स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु ये चार इन्द्रियां हैं और जो पर्याप्त हो चुके हैं उन्हें चतुरिन्द्रिय पर्याप्त कहते हैं।

१०. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त—उन चतुरिन्द्रिय जीवोंको जो लब्धपर्याप्त या अभी निवृत्यपर्याप्त हैं, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

११. असंज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्त जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु

और श्रोत्र ये पाँचों इन्द्रियाँ हैं, किन्तु मन नहीं वे असंज्ञी पंचेन्द्रिय कहलाते हैं। वे पर्याप्ति पूर्ण हो चुकनेपर असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय केवल तिर्य्यचगतिमें होते हैं। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव भी केवल तिर्य्यचगतिमें होते हैं।

१२. असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त—उन असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्यपर्याप्त हैं या अभी निवृत्त्यपर्याप्त हैं असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

१३. संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त—संज्ञी अर्थात् मनसहित पंचेन्द्रिय जीव पर्याप्ति पूर्ण हो चुकनेपर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त कहलाते हैं।

१४. संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त—उन संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंको जो लब्ध्यपर्याप्त हैं या अभी निवृत्त्यपर्याप्त हैं, संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कहते हैं।

विशेष - सिद्ध भगवान् अतीतजीवसमास होते हैं।

पर्याप्ति

पर्याप्ति - आहार वर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणाके परमाणुओंको शरीर, इन्द्रिय आदिरूप परिणामावनेकी शक्तिकी पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं।

पर्याप्ति ६ हैं—(१) आहारपर्याप्ति, (२) शरीरपर्याप्ति, (३) इन्द्रियपर्याप्ति, (४) इवासीच्छ्वास पर्याप्ति, (५) भाषापर्याप्ति, (६) मनः पर्याप्ति।

१. आहारपर्याप्ति—आहारवर्गणाके परमाणुओंको खल और रस भागरूप परिणामावनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको आहारपर्याप्ति कहते हैं।

२. शरीरपर्याप्ति—जिन परमाणुओंको खलरूप परिणामाया था उनको हाड़ वर्गरह कठिन अवयवरूप और जिनको रसरूप परिणामाया था उन

को रुधिरादिक द्रवरूप परिणामावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको शरीरपर्याप्ति कहते हैं ।

३. इन्द्रियपर्याप्ति—आहारवर्गणाके परमाणुओंको इन्द्रियके आकार परिणामावनेको तथा इन्द्रिय द्वारा विषय ग्रहण करनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको इन्द्रियपर्याप्ति कहते हैं ।

४. श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति—आहारवर्गणाके परमाणुओं को श्वासोच्छ्वासरूप परिणामावनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति कहते हैं ।

५. भाषापर्याप्ति—भाषावर्गणाके परमाणुओंको वचन रूप परिणामावनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको भाषापर्याप्ति कहते हैं ।

६. मनः पर्याप्ति—मनोवर्गणाके परमाणुओंको हृदयस्थानमें आठ पांखुड़ीके कमलाकार भनरूप परिणामावनेको तथा उसके द्वारा यथावत् विचार करनेके कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको मनः पर्याप्ति कहते हैं ।

विशेष—सिद्ध भगवानको अतीतपर्याप्ति कहते हैं ।

प्राण

प्राण—जिनके संयोगसे यह जीव जीव अवस्थाको प्राप्त हो व विद्योगसे मरण अवस्थाको प्राप्त हो, उनको प्राण कहते हैं ।

प्राण १० हैं—

(१) स्पर्शनेन्द्रिय, (२) रसनेन्द्रिय, (३) घ्राणेन्द्रिय, (४) चक्षुरिन्द्रिय, (५) श्रोत्रेन्द्रिय, (६) मनोबल, (७) वचनबल, (८) कायबल, (९) आयु और (१०) श्वासोच्छ्वास ।

विशेष—सिद्ध भगवान अतीतप्राण कहे जाते हैं ।

संज्ञा

संज्ञा—ब्राह्मणके संस्कारको संज्ञा कहते हैं । ये संज्ञा ४ हैं—

(१) आहारसंज्ञा, (२) भयसंज्ञा, (३) मैथुनसंज्ञा, और (४) परिग्रहसंज्ञा ।

१. आहारसंज्ञा—आहारसम्बन्धी वाञ्छाके संस्कारको आहारसंज्ञा कहते हैं ।

२. भयसंज्ञा—भयसम्बन्धी परिणामके संस्कारको भयसंज्ञा कहते हैं ।

३. मैथुनसंज्ञा—मैथुनसम्बन्धी वाञ्छाके संस्कारको मैथुनसंज्ञा कहते हैं ।

४. परिग्रहसंज्ञा—परिग्रहसम्बन्धी वाञ्छाके संस्कारको परिग्रह संज्ञा कहते हैं ।

विशेष—दशम गुणस्थानसे ऊपरके जीव अतीतसंज्ञ कहलाते हैं ।

मार्गणा

मार्गणा—जिन धर्मविशेषोंसे जीवोंकी खोज हो सके, उन धर्मविशेषों से जीवोंकी खोजना मार्गणा है । ये १४ हैं—

(१) गति, (२) इन्द्रियजाति, (३) काय, (४) योग, (५) वेद, (६) कषाय, (७) ज्ञान (८) सद्यम, (९) दर्शन, (१०) लेख्या, (११) भव्यत्व, (१२) सम्यक्त्व, (१३) सज्ञी (१४) आहारक ।

गतिमार्गणा

(१) गतिमार्गणा—गतिनामा नामकर्मके उदयसे उस गतिविषयक भावके कारणभूत जीवकी अवस्थाविशेषको गति कहते हैं । इसकी मार्गणा ५ हैं :—

(१) नरकगति, (२) तिर्यचगति, (३) मनुष्यगति, (४) देवगति, (५) अगति याने गतिरहित ।

१. नरक गति—इस पृथ्वीके नीचे सात नरक हैं उनमें नारकी जीव रहते हैं, उन्हें बहुत काल पर्यन्त घोर दुःख सहना पड़ता है, उनकी गतिको नरकगति कहते हैं ।

२. तिर्यच गति - नारकी, मनुष्य व देवके अतिरिक्त जितने संसारी जीव हैं वे सब तिर्यञ्च कहलाते हैं । एकेन्द्रिय (जिसमें निगोद भी शामिल हैं) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असैनी पंचेन्द्रिय ये तो नियमसे तिर्यञ्च ही हैं । उनकी गतिको तिर्यञ्च गति कहते हैं ।

३. मनुष्यगति—स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकाएं मनुष्य कहे जाते हैं इनकी गतिको मनुष्यगति कहते हैं ।

४. देवगति—भवनवासी, व्यन्तर, (जिनके निवास स्थान इस पृथ्वी के खरभाग व पङ्कभागमें है) ज्योतिष (सूर्य, चन्द्र, तारादि) व वैमानिक (१६ स्वर्ग, नव ग्रैवेयक नव अनुदिश, ५ अनुत्तरमें रहने वाले) इन चार प्रकारके देवोंकी गतिको देवगति कहते हैं ।

५. अगति (गतिरहित)—गतिसे रहित जीवोंको गतिरहित कहते हैं, सिद्धोंके गति नहीं हैं, ये गतिरहित हैं ।

इन्द्रियजाति-मार्गणा

इन्द्रियावरणके क्षयोपशमसे होने वाले संसारी आत्माके बाह्य चित्त विशेषको इन्द्रिय कहते हैं । इसकी मार्गणा ६ हैं—

१. एकेन्द्रिय, २. द्वीन्द्रिय, ३. त्रीन्द्रिय, ४. चतुरिन्द्रिय, ५. पंचेन्द्रिय ६. अतीन्द्रिय ।

एकेन्द्रिय आदि का वर्णन हो चुका है ।

अतीन्द्रिय—जो इन्द्रियों (द्रव्येन्द्रिय व भावेन्द्रिय दोनों) से रहित हैं वे अतीन्द्रिय कहलाते हैं ।

कायमार्गणा

आत्मप्रवृत्ति अर्थात् योगसे संचित पुद्गल-पिण्डको काय कहते हैं । इसकी मार्गणा ७ हैं :—

१. पृथ्वीकायिक, २. अप्कायिक (जलकायिक) ३. अग्निकायिक ४. वायुकायिक, ५. वनस्पतिकायिक, ६. त्रसकायिक, ७. अकाय ।

जिनके पृथ्वी आदि शरीर हो वे पृथ्वीकायिक आदि कहलाते हैं ।

अकाय—जिनके कोई प्रकारका काय नहीं रहा वे अकायिक (अकाय) कहलाते हैं :—

योगमार्गणा

मन, वचन, कायके निमित्तसे आत्मप्रदेशके परिस्पंद (हलन, चलन)

(११)

का कारणभूत जो प्रयत्न होता है उसे योग कहते हैं। इसकी मार्गणा १६ हैं :—

१ सत्यमनोयोग, २. असत्यमनोयोग, ३. उभयमनोयोग ४. अनुभय मनोयोग, ५. सत्यवचनयोग, ६. असत्यवचनयोग, ७. उभयवचनयोग, ८. अनुभयवचनयोग, ९. औदारिककाययोग, १०. औदारिकमिश्रकाययोग, ११. वैक्रियककाययोग, १२. वैक्रियकमिश्रकाययोग, १३. अहारककाययोग, १४. अहारकमिश्रकाययोग, १५. कर्मणिकाययोग, १६. अयोग।

१. सत्यमनोयोग—सत्य वचनके कारणभूत मनको सत्य मन कहते हैं, उसके निमित्तसे होने वाले योगको सत्य मनोयोग कहते हैं।

२. असत्यमनोयोग—असत्य वचनके कारणभूत मनको असत्य मन कहते हैं और उसके निमित्तसे होने वाले योगको असत्य मनोयोग कहते हैं।

३. उभयमनोयोग—उभय (सत्य, असत्य दोनों) मनके निमित्तसे होने वाले योगको उभय मनोयोग कहते हैं।

४. अनुभय मनोयोग—अनुभय (न सत्य, न असत्य) मनके निमित्त से होने वाले योगको अनुभय मनोयोग कहते हैं।

५. सत्यवचनयोग—सत्य वचनके निमित्तसे होनेवाले योगको सत्य वचनयोग कहते हैं।

६. असत्यवचनयोग—असत्य वचनके निमित्तसे होने वाले योगको असत्य वचनयोग कहते हैं।

७. उभयवचनयोग—उभय (सत्य, असत्य दोनों) वचनके निमित्तसे होनेवाले योगको उभय वचनयोग कहते हैं।

८. अनुभयवचनयोग—अनुभय (न सत्य, न असत्य) वचनके निमित्त से होने वाले योगको अनुभय वचनयोग कहते हैं।

९. औदारिककाययोग—मनुष्य त्रियञ्चोंके शरीरको औदारिककाय कहते हैं, उसके निमित्तसे जो योग होता है उसे औदारिककाययोग कहते हैं।

१०. औदारिकमिश्रकाययोग—कोई प्राणी मरकर मनुष्य या त्रियञ्च

गतिमें स्थानपर पहुंचा । वहाँ पहुंचते ही वह औदारिक वर्गणाओंको ग्रहण करने लगता है उस समयसे अन्तर्मुहूर्त तक (जब तक शरीरपर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) कार्माणमिश्रित औदारिक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्ति से जीवके प्रदेशमें परिस्पंदके लिये जो उस जीवका प्रयत्न होता है उसे औदारिकमिश्रकाययोग कहते हैं ।

११. वैक्रियक काययोग—देव व नारकियोंके शरीरको वैक्रियक काय कहते हैं । उसके निमित्तसे जो योग होता है उसे वैक्रियककाययोग कहते हैं ।

१२. वैक्रियकमिश्रकाययोग—कोई मनुष्य या तिर्यञ्च मर कर देव या नरकगतिमें स्थानपर पहुंचा । वहाँ पहुंचते ही वह वैक्रियक वर्गणाओंको ग्रहण करने लगता है, उस समयसे अन्तर्मुहूर्त तक (जब तक शरीर-पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती) कार्माणमिश्रित वैक्रियक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्तिसे जीवके प्रदेशोंमें परिस्पंदके लिये जो उस जीवका प्रयत्न होता है उसे वैक्रियकमिश्रकाययोग कहते हैं ।

१३. आहारककाययोग—सूक्ष्मतत्त्वमें संदेह होनेपर या तीर्थवन्दनादि के निमित्त आहारक ऋद्धि वाले छटे गुणस्थानवर्ती मुनियोंके मस्तिष्कसे एक हाथका बबल, शुभ, व्याघातरहित आहारक शरीर निकलता है उसे आहारक काय कहते हैं, उसके निमित्तसे होनेवाले योगको आहारककाययोग कहते हैं ।

१४. आहारकमिश्रकाययोग—आहारक शरीरकी पर्याप्ति जब तक पूर्ण नहीं होती तब तक औदारिक व आहारक वर्गणाओंके द्वारा उत्पन्न हुई शक्तिसे जीवके प्रदेशोंमें परिस्पंदके लिये जो प्रयत्न होता है उसे आहारक-मिश्रकाययोग कहते हैं ।

१५. कर्माणकाययोग—मोड़वाली विग्रहगतिको प्राप्त चारों गतियोंके जीवोंके तथा प्रतर और लोकपूरण समुद्रातको प्राप्त केवली जिनके कार्माण काय होता है, उसके निमित्तसे होनेवाले योगको कार्माणकाययोग कहते हैं ।

१६. अयोग—अयोग केवली व सिद्ध भगवानके योग नहीं होता है ।

योगरहित अवस्थाको अयोग कहते हैं ।

वेदमार्गणा

पुवेद, स्त्रीवेद, नपुंसक वेदके उदयसे उत्पन्न हुई मैथुनकी अभिलाषा को वेद कहते हैं । इसकी मार्गणा ४ हैं :—

१. पुरुषवेद, २. स्त्रीवेद, ३. नपुंसक वेद, ४. अपगतवेद ।

१. पुरुषवेद—जिस भावमें स्त्रीके साथ रमण करने की इच्छा हो उसे पुरुषवेद कहते हैं ।

२. स्त्रीवेद—जिस भावमें पुरुषके साथ रमणकी इच्छा हो उसे स्त्रीवेद कहते हैं ।

३. नपुंसकवेद—जिस भावमें दोनोंके साथ रमण करनेकी इच्छा हो उसे नपुंसकवेद कहते हैं ।

४. अपगतवेद—जहां वेदका अभाव हो उसे अपगतवेद कहते हैं ।

कषाय-मार्गणा

जो आत्माके सम्यक्त्व, देशचरित्र, सकलचरित्र और यथाख्यात चग्नि रूप गुणको घाते उसे कषाय कहते हैं । इसकी मार्गणा २६ हैं :—

१—४. अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ, ५—८. अप्रत्याख्या-नावरण क्रोध मान माया लोभ, ९—१२. प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ, १३—१६. संज्वलन क्रोध मान माया लोभ, १७ हास्य १८. रति, १९. अरति, २०. शोक, २१. भय, २२. जुगुप्सा, २३ पुरुषवेद, २४. स्त्रीवेद, २५. नपुंसकवेद, २६ अकषाय ।

१—४. अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ—उन्हें कहते हैं जो आत्माके सम्यक्त्व गुणको घातें ।

५—८. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया लोभ—उन्हें कहते हैं जो देशचारित्रको घातें । देशचारित्र श्रावकके अर्थात् पंचमगुणस्थानवर्ती जीवके होता है ।

९—१२. प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ—उन्हें कहते

हैं जो सकलचारित्रको घातें । (सकल चारित्र मुनियोंके होता है) ।

१३—१६. संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ—उन्हें कहते हैं जो यथाख्यातचारित्र को घातें (यथाख्यातचारित्र ११वें १२वें १३वें व १४वें गुणस्थानमें होता है)

१७. हास्य—हंसनेके परिणामको हास्य कहते हैं ।

१८. रति—इष्ट पदार्थमें प्रीति करनेको रति कहते हैं ।

१९. अरति—अनिष्ट पदार्थोंमें अप्रीति करनेको अरति कहते हैं ।

२०. शोक—रंजके परिणामको शोक कहते हैं ।

२१. भय—डरको कहते हैं ।

२२. जुगुप्सा—ग्लानिको कहते हैं ।

२३—२५. पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद—का वर्णन हो चुका ।

२६. अकषाय—कषाय के अभावको कहते हैं ।

ज्ञानमार्गणा

वस्तुके जाननेको ज्ञान कहते हैं । इसकी मार्गणा ८ हैं—

१. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४. मनःपर्ययज्ञान, ५. केवलज्ञान, ६. कुमतिज्ञान, ७. कुश्रुतज्ञान, ८. कुअवधिज्ञान (विभंगावधि ज्ञान) । यहां मिश्र ज्ञानको कुमति आदि में शामिल किया है ।

१. मतिज्ञान—इन्द्रिय और मनके निमित्तसे उत्पन्न होने वाले ज्ञान को मतिज्ञान कहते हैं ।

२. श्रुतज्ञान—मतिज्ञानसे जाने हुये पदार्थके सम्बन्धमें अन्य विशेष जाननेको श्रुतज्ञान कहते हैं ।

३. अवधिज्ञान—इन्द्रिय और मनकी सहायताके बिना, आत्मीय शक्तिसे रूपी पदार्थोंको द्रव्य क्षेत्र काल भावकी मर्यादा लेकर जाननेको अवधिज्ञान कहते हैं ।

४. मनःपर्ययज्ञान—दूसरेके मनमें तिष्ठते हुए (स्थित) रूपी पदार्थ को इन्द्रिय मनकी सहायताके बिना आत्मीय शक्तिसे जाननेको मनःपर्यय ज्ञान कहते हैं ।

५. केवलज्ञान—तीन लोक तीन कालवर्ती समस्त द्रव्य पर्यायोंको एक साथ स्पष्ट जानना केवलज्ञान है ।

६. कुमतिज्ञान—सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले मतिज्ञानको कुमति ज्ञान कहते हैं ।

७. कुश्रुतज्ञान—सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले श्रुतज्ञानको कुश्रुत ज्ञान कहते हैं ।

८. कुअवधिज्ञान—सम्यक्त्वके न होनेपर होनेवाले अवधिज्ञानको कुअवधिज्ञान कहते हैं । इसका दूसरा नाम विभङ्गावधिज्ञान है ।

संयममार्गणा

संयम—अहिंसादि पंच व्रत धारण करना, ईर्यापथ आदि पाँच समितियोंका पालन करना, क्रोधादि कषायोंका निग्रह करना, मनोयोग आदि तीनों योगोंको रोकना, पांचों इन्द्रियोंका विजय करना सो संयम है । इसकी मार्गणा ८ हैं—

१. सामायिक, २. छेदोपस्थापना, ३. परिहारविशुद्धि, ४. सूक्ष्मसाम्पराय, ५. यथाख्यात चारित्र, ६. असंयम, ७. संयमासंयम, ८, असंयम—संयम—संयमासंयम इन तीनोंसे रहित ।

१. सामायिक—सब प्रकारकी अविरतिसे विरक्त होना व समताभाव धारण करना सामयिक संयम है ।

२. छेदोपस्थापना—भेदरूपसे व्रतके धारण करनेको या व्रतोंमें छेद (भंग) होनेपर फिरसे व्रतोंके पालन करनेको छेदोपस्थापना संयम कहते हैं ।

३. परिहारविशुद्धि—जिसमें हिंसाका परिहार प्रधान हो ऐसे शुद्धि प्राप्त संयमको परिहारविशुद्धि संयम कहते हैं ।

४. सूक्ष्मसाम्पराय—सूक्ष्म कषाय (लोभ) वाले जीवोंके जो संयम होता है उसे सूक्ष्मसाम्पराय संयम कहते हैं ।

५. यथाख्यात संयम—कषायके अभावमें जो आत्माका अनुष्ठान होता है उसमें निवास करनेको यथाख्यात संयम कहते हैं ।

६. असंयम—जहां किसी प्रकारके संयम या संयमासंयमका लेश भी

न हो उसे असंयम कहते हैं ।

७. संयमासंयम—जिसके त्रसकी अविरतिका त्याग हो चुका हो, जिनके अणुव्रतका धारणा है उनके चारित्रिको संयमासंयम कहते हैं ।

८. असंयम-संयम-संयमासंयम-रहित—सिद्ध भगवान सदा अपने शुद्ध स्वरूपमें स्थित हैं उनके ये तीनों नहीं पाये जाते सो वे असंयम-संयम-संयमासंयम-रहित हैं ।

दर्शन-मार्गणा

आत्माभिमुख अवलोकनको दर्शन कहते हैं, इसकी मार्गणा ४ हैं—

१. चक्षुर्दर्शन, २. अचक्षुर्दर्शन, ३. अवधिदर्शन, ४. केवलदर्शन ।

१- चक्षुर्दर्शन—चक्षुरिन्द्रियजन्य ज्ञानसे पहले होने वाले दर्शनको चक्षुर्दर्शन कहते हैं ।

२- अचक्षुर्दर्शन—चक्षुरिन्द्रियके अलावा अन्य इन्द्रिय व मनसे उत्पन्न होने वाले दर्शनको अचक्षुर्दर्शन कहते हैं ।

३. अवधिदर्शन—अवधिज्ञानसे पहिले होनेवाले दर्शनको अवधिदर्शन कहते हैं ।

४. केवलदर्शन—केवलज्ञानके साथ साथ होने वाले दर्शनको केवल दर्शन कहते हैं ।

लेश्यामार्गणा

कषायसे अनुरंजित योगप्रवृत्तिको लेश्या कहते हैं, इसकी मार्गणा ७ है :—

१- कृष्ण लेश्या, २. नील लेश्या, ३. कापोत लेश्या, ४ पीत लेश्या, ५. पद्म लेश्या, ६. शुक्ल लेश्या, ७. अलेश्य ।

१. कृष्णलेश्या—तीव्र क्रोध करने वाला हो, वैरको न छोड़े, लड़ने का जिसका स्वभाव हो, धर्म और दयासे रहित हो, दुष्ट हो जो किसीके वश न हो, ये लक्षण कृष्ण लेश्याके हैं ।

२. नीललेश्या—काम करनेमें मन्द हो, स्वच्छन्द हो, कार्य करनेमें

(१७)

विवेकरहित हो, विषयोंमें लम्पट हो, कामी, मायाचारी, आलसी हो, दूसरे लोग जिसके अभिप्रायको सहसा नहीं जान सकें, अतिनिद्रालु हो, दूसरोंको अज्ञानमें चतुर हो, परिग्रहमें तीव्र लालसा हो, ये लक्षण नीललेश्याके हैं ।

३. कापोतलेश्या—रूसे, निन्दा करे, द्वेष करे, शोकाकुल हो, भयभीत हो, ईर्ष्या करे, दूसरोंका तिरस्कार करे, अपनी विविध प्रशंसा करे, दूसरोंका विश्वास न करे, स्तुति करनेवाले पर सन्तुष्ट होवे, रणमें मरण चाहे, स्तुति करने वालोंको खूब घन देवे, अपना कार्य अकार्य न देखे ये लक्षण कापोतलेश्या के हैं ।

४. पीतलेश्या—कार्य, अकार्य सेव्य असेव्यको समझने वाला हो, सर्व समदर्शी हो दया-परायण हो, दानरत कोमलपरिणामी हो । ये लक्षण पीतलेश्याके हैं ।

५. पद्मलेश्या—स्थायी भद्र, उत्तम कार्य करने वाला, सहनशील, साधुगुरुपूजार्त हो । ये लक्षण पद्मलेश्याके हैं ।

६. शुक्ललेश्या—पक्षपात न करे, निदान न बाँधे, सबमें समानता की दृष्टि रखे, इष्टराग अनिष्टद्वेष न करे, ये लक्षण शुक्ललेश्याके हैं ।

भव्यत्व-मार्गणा

जिन जीवोंके अनन्तचतुष्टयरूप सिद्धि व्यक्त होनेकी योग्यता हो वे भव्य हैं । उनके भावको भव्यत्व कहते हैं इसकी मार्गणा ३ हैं :—

(१) भव्यत्व (२) अभव्यत्व (३) अनुभय (न भव्यत्व न अभव्यत्व)

उक्त योग्यताके अभाव को अभव्यत्व कहते हैं ।

सिद्धजीव न भव्य हैं और न अभव्य हैं ।

सम्यक्त्व-मार्गणा

मोक्षमार्गके प्रयोजनभूत तत्त्वोंके यथार्थ अद्धानको सम्यक्त्व कहते हैं इसकी मार्गणा ६ हैं :—

१. औपशमिक सम्यक्त्व, २. क्षायोपशमिक (वेदक) सम्यक्त्व ३. क्षायिक सम्यक्त्व, ४. मिथ्यात्व, ५. सासादनसम्यक्त्व, ६. सम्यग्मिथ्यात्व

१ औपशमिक सम्यक्त्व—अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, और सम्यक्प्रकृति इन ७ प्रकृतियोंके उपशमसे जो सम्यक्त्व होता है उसे औपशमिक सम्यक्त्व कहते हैं। इसके दो भेद हैं—

१. प्रथमोपशमसम्यक्त्व, २. द्वितीयोपशमसम्यक्त्व।

मिथ्यात्वके अनन्तर जो उपशम सम्यक्त्व होता है उसे प्रथमोपशम-सम्यक्त्व कहते हैं। अनादि मिथ्यादृष्टि व मिश्रप्रकृति सम्यक्प्रकृतिकी उद्धे-लना कर चुकने वाले जीवोंके अनन्तानुबन्धी ४ व मिथ्यात्व इन पांचके उप-शम से प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है और ७ की सत्ता वालोंके ७ प्रकृतियों के उपशमसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है।

क्षायोपशमिक सम्यक्त्वके अनन्तर जो उपशम सम्यक्त्व होता है उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं और यह भी ७ प्रकृतियोंके उपशमसे होता है। सप्तम गुणस्थानवर्ती जीव यदि उपशम श्रेणी चढ़े तब उसके क्षायिक सम्यक्त्व या औपशमिक सम्यक्त्व होना आवश्यक है। वहां यदि उपशम सम्यक्त्व करे तब वह द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहलाता है। द्वितीयोपशम-सम्यक्त्वमें मरण हो सकता है। यदि मरण हो तो देवगतिमें ही जावेगा। प्रथमोपशमसम्यक्त्वमें मरण नहीं होता।

२. क्षायोपशमिक (वेदक) सम्यक्त्व—अनन्तानुबन्धी ४ व मिथ्यात्व सम्यग्मिथ्यात्व इन ६ प्रकृतियोंके उदयाभावी क्षय व उपशमसे तथा सम्यक्-प्रकृतिके उदयसे जो सम्यक्त्व होता है उसे क्षायोपशमिक सम्यक्त्व कहते हैं। इस सम्यक्त्वमें सम्यक्प्रकृतिके उदयके कारण सम्यग्दर्शनमें चल मलिन व अगाढ़ (जो कि सूक्ष्म दोष हैं) दोष लगते हैं।

३. क्षायिक सम्यक्त्व—अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व व सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति इन सात प्रकृतियोंके क्षयसे जो सम्यक्त्व होता है उसे क्षायिक सम्यक्त्व कहते हैं।

४. मिथ्यात्व—मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयसे तत्त्वोंके अश्रद्धानरूप विप-रीत अभिप्रायको मिथ्यात्व कहते हैं। vikasnd@gmail.com

५. सासादन सम्यक्त्व—सम्यक्त्वकी विराधना होनेपर यदि मिथ्यात्वका उदय न आया तो मिथ्यात्वका उदय न आने तक अनन्तानुबन्धी कषाय के उदयसे होनेवाला विपरीत आशय सासादन सम्यक्त्व कहलाता है।

६. सम्यग्मिथ्यात्व—सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयसे जो मिश्र परिणाम होता है, जिसे न तो सम्यक्त्व रूप ही कह सकते हैं और न मिथ्यात्वरूप ही कह सकते हैं, किन्तु जो आशय कुछ समीचीन व कुछ असमीचीन है उसे सम्यग्मिथ्यात्व कहते हैं।

संज्ञीमार्गणा

जो संज्ञा अर्थात् मनसाहित है उन्हें संज्ञी कहते हैं, इसकी मार्गणा ३ हैं

१. संज्ञी, २. असंज्ञी, ३. अनुभय (न संज्ञी न असंज्ञी)

१. संज्ञी—संज्ञी याने मनसाहित पचेन्द्रिय ही संज्ञी होते हैं। ये चारों गतियोंमें पाये जाते हैं।

२. असंज्ञी—एकेन्द्रियसे लेकर असेनी पचेन्द्रिय तक जीव असंज्ञी होते हैं, ये सब तिर्यञ्च हैं।

३. अनुभय—सयोगकेवली, अयोगकेवली व सिद्ध भगवान अनुभय हैं, ये न संज्ञी हैं, क्योंकि इनके भावमन नहीं और न असंज्ञी हैं, क्योंकि अविवेक नहीं। सयोग केवलीके यद्यपि द्रव्यमन है, परन्तु भावमन नहीं है।

आहारक-मार्गणा

शरीर, मन, वचनके योग्य वर्गणावोंका ग्रहण करना आहार कहलाता है जो इन वर्गणावोंको ग्रहण करे वह आहारक है।

जब कोई जीव मरकर दूसरी गतिमें जाता है तब जन्मस्थान पर पहुँचते ही आहारक हो जाता है, इससे पहिले जीव अनाहारक रहता है, किन्तु ऋजुगतिसे जानेवाला यह अनाहारक नहीं होता, क्योंकि वह एक समयमें ही जन्मस्थानपर पहुँच जाता है। तेरहवें गुणस्थानवर्ती जीव जब केवलि-समुद्घात करते हैं, प्रतरके दो समय, लोकपूरणका एक समय, इन तीन समयोंमें अनाहारक होते हैं, शेष समय आहारक होते हैं। अयोग

केवली और सिद्ध भगवान अनाहारक ही होते हैं ।

उपयोग

बाह्य तथा आभ्यन्तर कारणोंके द्वारा होने वाली आत्माके चेतना गुणकी परिणतिको उपयोग कहते हैं । उपयोग २ हैं :— १ साकारोपयोग,

२ निराकारोपयोग । साकारोपयोग ज्ञानोपयोगको कहते हैं ।

निराकारोपयोग—दर्शनोपयोगको कहते हैं । दोनों ही उपयोग सभी जीवोंके होते हैं, किन्तु छद्मस्थके क्रमशः होते हैं केवली के युगपत् होते हैं ।

ध्यान

एक विषय में चिन्तनके रुकनेको ध्यान कहते हैं, ध्यान १६ प्रकार का है—आर्तध्यान ४, रौद्रध्यान ४, धर्मध्यान ४, शुक्लध्यान ४ ।

आर्तध्यान ४—(१) इष्टवियोगज (२) अनिष्टसंयोगज (३) वेदनाप्रभव (४) निदान ।

रौद्रध्यान ४—(१) हिंसानन्द (२) मृषानन्द (३) चौयानन्द (४) परिग्रहानन्द ।

धर्मध्यान ४—(१) आज्ञाविचय (२) अपायविचय (३) विपाक-विचय (४) सस्थानविचय ।

शुक्लध्यान ४—(१) पृथक्त्ववितर्कबीचार (२) एकत्ववितर्कबीचार (३) सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती (४) व्युपरतक्रियानिवृत्ति ।

१. इष्टवियोगज आर्तध्यान—इष्ट पदार्थके वियोग होनेपर उसके संयोगके लिए चिन्तन करना इष्टवियोगज आर्तध्यान है ।

२. अनिष्टसंयोगज आर्तध्यान—अनिष्ट पदार्थके संयोग होनेपर उस के वियोगके लिए चिन्तन करना अनिष्टसंयोगज आर्तध्यान है ।

३. वेदनाप्रभव आर्तध्यान—शारीरिक पीड़ा होनेपर उसके सम्बन्धमें चिन्तन करना वेदनाप्रभव आर्तध्यान है ।

४. निदान—भोग विषयोंकी चाह सम्बन्धी चिन्तनको निदान नामक आर्तध्यान कहते हैं । आर्तध्यानमें दुःखरूप परिणाम रहता है ।

आर्ति=दुःख उसमें होने बालेको आर्त कहते हैं ।

२. हिसानन्द रौद्रध्यान—कृत कारित आदि हिसामें आनन्द मानना व हिसाके लिए चिन्तन करना हिसानन्द रौद्रध्यान है ।

६. मृषानन्द भूँठमें आनन्द मानना व भूँठके लिए चिन्तन करना सो मृषानन्द रौद्रध्यान है ।

७. चौयानन्द—चोरीमें आनन्द मानना व चोरीके लिए चिन्तन करना सो चौयानन्द रौद्रध्यान है ।

८. परिग्रहानन्द—परिग्रहमें आनन्द मानना व परिग्रह याने विषय की रक्षाके लिए चिन्तन करना परिग्रहानन्द रौद्रध्यान है ।

रुद्र=क्रूर, उसके भावको रौद्र कहते हैं ।

९. आज्ञाविचय—आगमकी आज्ञाकी श्रद्धासे तत्त्व विषयक चिन्तन करना आज्ञाविचय धर्म्यध्यान है ।

१०. अपायविचय—अपने या परके राखादि भाव जो दुःखके मूल हैं उनके विनाश होनेका चिन्तन करना अपायविचय धर्म्यध्यान है ।

११. विपाकविचय—कर्मोंके फलके सम्बन्धमें संवेगवर्द्धक चिन्तन करना विपाकविचय धर्म्य ध्यान है ।

१२. संस्थानविचय—लोकके आकार काल आदि के आश्रय जीवके परिभ्रमणादिविषयक असारताका चिन्तन करना व अरहन्त, सिद्ध मन्त्र पद आदि के आश्रयसे तत्त्वचिन्तन करना सो संस्थानविचय धर्म्यध्यान है

१३. पृथक्त्ववितर्कवीचार—अर्थ, योग, व शब्दोंके परिवर्तन सहित श्रुतके चिन्तनको पृथक्त्ववितर्कवीचार शुक्लध्यान कहते हैं ।

१४. एकत्ववितर्क अवीचार—एकही अर्थमें एक ही योगसे उन्हीं शब्दोंमें श्रुतके चिन्तनको एकत्ववितर्क अवीचार शुक्लध्यान कहते हैं ।

१५. सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती—सयोगकेबलीके अन्तिम अन्समुहूर्तमें जब कि बादर योग भी नष्ट हो जाता है तब सूक्ष्म काययोगसे भी दूर होनेके लिए जो योग उपयोगकी स्थिरता है उसे सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति शुक्लध्यान

कहते हैं ।

१६. व्युपरतक्रियानिवृत्ति—समस्त योग नष्ट हो चुकनेपर अयोग केवली के यह व्युपरतक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान होता है ।

आस्रव

कर्मों के आनेके कारणभूत भावको आस्रव कहते हैं । इसके ५७ भेद हैं :—

मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कषाय २५, योग १५ ।

मिथ्यात्व ५

एकान्तमिथ्यात्व, विपरीतमिथ्यात्व, संशयमिथ्यात्व, विनयमिथ्यात्व, अज्ञानमिथ्यात्व ।

१. एकान्तमिथ्यात्व—अनन्तधर्मात्मक वस्तु होनेपर भी उसमें एक धर्मकी ही श्रद्धा करना एकान्तमिथ्यात्व है ।

२. विपरीत मिथ्यात्व—वस्तुके स्वरूपसे विपरीत स्वरूपकी श्रद्धा करना विपरीत मिथ्यात्व है ।

३. संशयमिथ्यात्व—वस्तुके स्वरूपमें संशय करना संशयमिथ्यात्व है ।

४. विनय (वैनयिक) मिथ्यात्व—देव कुदेव में, तत्त्व अतत्त्व में, शास्त्र कुशास्त्र में, गुरु कुगुरु में, सभीको भला मानकर विनय करना विनयमिथ्यात्व है ।

५. अज्ञानमिथ्यात्व—हित अहित का विवेक न रखना अज्ञान मिथ्यात्व है ।

समस्त संकटोंका मूल कारण मिथ्यात्व भाव है ।

अविरति १२

काय—अविरति ६, विषय—अविरति ६ ।

काय—अविरति—पृथ्वीकायिक-अविरति, जलकायिक-अविरति, अग्नि कायिक-अविरति, वायुकायिक-अविरति, बनस्पतिकायिक-अविरति, वस-कायिक-अविरति ।

(२३)

विषय-अविरति ६—स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति, रसनेन्द्रियविषय-अविरति, घ्राणेन्द्रियविषय-अविरति, चक्षुरिन्द्रियविषय-अविरति, श्रोत्रेन्द्रिय-विषय-अविरति, मनोविषय-अविरति ।

१. पृथ्वीकायिक-अविरति—पृथ्वीकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको पृथ्वीकायिक-अविरति कहते हैं ।

२. जलकायिक-अविरति—जलकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको जलकायिक-अविरति कहते हैं ।

३. अग्निकायिक-अविरति—अग्निकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको अग्निकायिक-अविरति कहते हैं ।

४. वायुकायिक-अविरति—वायुकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको वायुकायिक-अविरति कहते हैं ।

५. वनस्पतिकायिक-अविरति—वनस्पतिकायिक जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको वायुकायिक-अविरति कहते हैं ।

६. त्रसकायिक-अविरति—त्रसकायिक (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय) जीवोंकी हिंसासे विरक्त न होनेको त्रसकायिक-अविरति कहते हैं ।

७. स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति—स्पर्शन इन्द्रियके विषयोंसे विरक्त न होनेको स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं ।

८. रसनेन्द्रियविषय-अविरति—रसना इन्द्रियके विषय (स्वाद) से विरक्त न होनेको रसनेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं ।

९. घ्राणेन्द्रियविषय-अविरति—घ्राण इन्द्रियके विषयसे विरक्त न होनेको घ्राणेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं ।

१०. चक्षुरिन्द्रियविषय-अविरति—चक्षु इन्द्रियके विषयसे विरक्त न होनेको चक्षुरिन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं ।

११. श्रोत्रेन्द्रियविषय-अविरति—श्रोत्र इन्द्रियके विषयसे विरक्त न होने को श्रोत्रेन्द्रियविषय-अविरति कहते हैं ।

१२. मनोविषय-अविरति—मनके विषयसे (सन्मान आरामकी चाह

(२४)

आदिसे) विरक्त न होनेको मनोविषय-अविरति कहते हैं ।

कषाय २५

इनका वर्णन कषायमार्गणामें हो चुका है ।

योग १५

इनका वर्णन योगमार्गणा में हो चुका है ।

भाव

भाव—अपने प्रतिपक्षी कर्मोंके उपशम आदि होनेपर जो गुण (स्व-भाव या विभाव रूप) प्रकट हो उन्हें भाव कहते हैं । इनका उपादान कारण जीव है अर्थात् ये जीवमें ही होते हैं अन्य द्रव्यमें नहीं होते, इस लिये ये जीवके निज तत्त्व कहलाते हैं ।

ये भाव ५३ होते हैं :—

औपशमिक २, क्षायिक ९, क्षायोपशमिक १८, औपशमिक २१ और पारिणामिक ३ ।

औपशमिक भाव

अपने प्रतिपक्षी कर्मोंके उपशम होनेपर जो गुण (भाव) प्रकट हों उन्हें औपशमिक भाव कहते हैं ।

औपशमिक भावके दो भेद हैं — १. औपशमिक सम्यक्त्व, २. औपशमिक चारित्र ।

१ औपशमिक सम्यक्त्व—इसका वर्णन हो चुका है ।

२. औपशमिक चारित्र चारित्र मोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके उपशमसे जो चारित्र होता है उसे औपशमिक चारित्र कहते हैं ।

क्षायिक भाव

अपने प्रतिपक्षी कर्मोंके क्षयसे जो गुण प्रकट हों उन्हें क्षायिक भाव कहते हैं ।

क्षायिक भावके ९ भेद हैं—१. क्षायिकज्ञान (केवलज्ञान), २. क्षायिक दर्शन (केवल दर्शन), ३. क्षायिक दान, ४. क्षायिक लाभ, ५. क्षायिक भोग,

६. क्षायिक उपभोग, ७. क्षायिक वीर्य, ८. क्षायिक सम्यक्त्व, ९. क्षायिक चारित्र ।

१. क्षायिक ज्ञान—ज्ञानावरण कर्मके क्षयसे जो ज्ञान प्रकट हो उसे क्षायिक ज्ञान (केवल ज्ञान) कहते हैं ।

२. क्षायिक दर्शन—दर्शनावरण कर्म के क्षय से जो दर्शन प्रगट हो उसे क्षायिक दर्शन (केवल दर्शन) कहते हैं ।

३. क्षायिक दान—दानान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रकट हो उसे क्षायिक दान कहते हैं ।

४. क्षायिक लाभ—लाभान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रकट हो उसे क्षायिक लाभ कहते हैं ।

५. क्षायिक भोग—भोगान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रगट हो उसे क्षायिक भोग कहते हैं ।

६. क्षायिक उपभोग—उपभोगान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रगट हो उसे क्षायिक उपभोग कहते हैं ।

७. क्षायिक वीर्य—वीर्यान्तरायके क्षयसे जो गुण प्रगट हो उसे क्षायिक वीर्य कहते हैं ।

८. क्षायिक सम्यक्त्व—इसका वर्णन हो चुका है ।

९. क्षायिक चारित्र—चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके क्षय से जो चारित्र हो उसे क्षायिक चारित्र कहते हैं ।

क्षायोपशमिक भाव

। (अपने प्रतिपक्षी कर्मोंके स्पन्दोंके उदयाभावी क्षयसे किन्हीं स्पन्दोंको उपशमसे व किन्हीं स्पन्दोंके उदयसे जो भाव प्रकट हो उन्हें क्षायोपशमिक भाव कहते हैं ।

क्षायोपशमिक भावके ९ भेद हैं—ज्ञान ४ (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान) अज्ञान ३ (कुमति, कुश्रुत, कुअवधि), दर्शन ३ (चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवाधिदर्शन) लब्धि ५ (क्षायोपशमिक दान, लाभ

भोग, उपभोग, वीर्य) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक चारित्र, संयमासंयम ।

(१-४) ज्ञान ४—इनका वर्णन हो चुका ।

(५-७) अज्ञान ३—इनका वर्णन हो चुका ।

(८-१०) दर्शन ५—इनका वर्णन भी हो चुका ।

(११-१५) लब्धि ५—दानान्तराय आदिके क्षयोपशमसे क्षायोपशमिक दान आदि होते हैं ।

१६ क्षायोपशमिक सम्यक्त्व—इसका वर्णन हो चुका ।

क्षायोपशमिक चारित्र—अप्रत्याख्यानावरण ४ व प्रत्याख्यानावरण ४ इन आठ प्रकृतियोंके क्षयोपशममें महाव्रतादि ५ चारित्र होता है उसे क्षायोपशमिक चारित्र कहते हैं ।

१८ संयमासंयम—इसका वर्णन हो चुका ।

औदयिक भाव

अपनी उत्पत्तिके निमित्तभूत कर्मोंके उदयसे जो भाव प्रकट हों उन्हें औदयिक भाव कहते हैं । इनके २१ भेद हैं—

(१-४) गति ४—नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य, देव । (इनका वर्णन गति-मार्गणामें हो चुका है) ।

(५-८) कषाय ४—क्रोध, मान, माया, लोभ (इनका वर्णन वेद-मार्गणामें हो चुका है) ।

(९-११) लिंग ३—पुंवेद, स्त्रीवेद नपुंसकवेद (इनका वर्णन कषाय-मार्गणामें हो चुका है) ।

१२ मिथ्यादर्शन—(इसका स्वरूप सम्यक्त्वमार्गणामें बताया है) ।

१३. अज्ञान—ज्ञानावरण कर्मके उदयसे जो ज्ञानका अभाव रूप भाव है उसे अज्ञान भाव कहते हैं, यह अज्ञान औदयिक है ।

१४. असंयम—(इसका वर्णन संयममार्गणामें हो चुका है) ।

१५. असिद्ध—जबतक आठों कर्मोंका अभाव नहीं होता तब तक

(२७)

असिद्ध भाव है ।

(१६-२१) लेख्या ६-कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल । (इन का वर्णन लेख्यामार्गणामें हो चुका) ।

पारिणामिक भाव

पारिणामिकभाव—जो कर्मोंके उदय, उपशम, श्रय, श्रयोपशमकी अपेक्षाके बिना होवे वह पारिणामिक भाव है ।

पारिणामिक भावके ३ भेद हैं :—

१. जीवत्व, २. भव्यत्व, ३. अभव्यत्व ।

१ जीवत्व - जिससे जीवे वह जीवत्व है । यह दो प्रकार का है—
पहिला ज्ञानदर्शनरूप और दूसरा दसप्राणरूप । इनमें ज्ञानदर्शनरूप जीवत्व शुद्धपारिणामिक भाव है । प्राणरूप जीवत्व अशुद्ध पारिणामिक भाव है ।

२-३. भव्यत्व अभव्यत्व (इनका वर्णन भव्यत्वमार्गणामें किया है)।

अवगाहना

जिन जीवोंके देह है उनके देह प्रमाण तथा देहरहित (सिद्ध) जीवोंके जितने शरीरसे मोक्ष गये हैं उतने प्रमाण अवगाहनाका वर्णन करना इस स्थानका प्रयोजन है ।

जाति

उत्पत्तिस्थानको योनि या जाति कहते हैं । जाति ८४ लाख है ।

ये सचित्त, अचित्त, सचित्ताचित्त, क्षीत, उष्ण, क्षीतोष्ण, संवृत, विवृत, संवृतविवृत, इन ९ भेदोंके प्रभेदोंसे ८४ लाख हो जाते हैं ।

किन जीवोंकी कितनी जाति हैं :—

नित्य निमोदकी

इतरनिमोदकी

पृथ्वीकायिककी

जलकायिककी

७ लाख

७ लाख

७ लाख

७ लाख

अभिकायिककी	७ लाख
वायु कायिककी	७ लाख
वनस्पतिकायिककी	१० लाख
द्वीन्द्रियकी	२ लाख
त्रिन्द्रियकी	२ लाख
चतुरिन्द्रियकी	२ लाख
तिर्यञ्च पंचेन्द्रियकी	४ लाख
देवकी	४ लाख
नारककी	४ लाख
मनुष्यकी	१४ लाख

८४ लाख हैं

कुछ और स्पष्टीकरण—तिर्यञ्चकी ६२ लाख, एकेन्द्रियकी ५२ लाख, त्रसकी ३२ लाख, पंचेन्द्रियकी २६ लाख, विकलत्रयकी ६ लाख, जोड़ करने पर होती हैं। इसी प्रकार अन्यके भी लगाना चाहिये।

कुल

शरीरके भेदके कारण भूत नोकर्म वर्गणावर्गके भेदको कुल कहते हैं। सब कुल १६७॥ लाख कोटि (१६ नील ७५ खरब) होते हैं वे इस प्रकार हैं :—

पृथ्वीकायिक	२२ लाख कोटि
जलकायिक	७ लाख कोटि
अभिकायिक	३ लाख कोटि
वायुकायिक	७ लाख कोटि
वनस्पतिकायिक	२८ लाख कोटि
द्वीन्द्रिय	७ लाख कोटि
त्रिन्द्रिय	८ लाख कोटि
चतुरिन्द्रिय	९ लाख कोटि

(२६)

जलचर	१२॥ लाख कोटि
थलचर (पशु)	१० लाख कोटि
नभचर (पक्षी)	१२ लाख कोटि
छाती के सहारे चलने वाले तिर्यक्च	
दुमही भादि	६ लाख कोटि
देव	२६ लाख कोटि
नारकी	२४ लाख कोटि
मनुष्य	१२ लाख कोटि
	१६७॥ लाख कोटि

अंकों में कालों का वर्णन

पृथ्वीकायिक	२२०००,००,००,००,०००
जलकायिक	७०००,००,००,००,०००
अग्निकायिक	३०००,००,००,००,०००
वायुकायिक	७०००,००,००,००,०००
वन्स्पृष्टिकायिक	२५०००,००,००,००,०००
द्वीन्द्रिय	७०००,००,००,००,०००
त्रीन्द्रिय	४०००,००,००,००,०००
चतुरिन्द्रिय	६०००,००,००,००,०००
जलचर	१२५००,००,००,००,०००
थलचर	१००००,००,००,००,०००
नभचर	१२०००,००,००,००,०००
छाती के सहारे चलने वाले	
उरुप-रिसर्पादि	६०००,००,००,००,०००
देव	२६०००,००,००,००,०००
नारक	२४०००,००,००,००,०००

मनुष्य

१२०००,००,००,००,०००

१६७५००,००,००,००,०००

कुछ और स्पष्टीकरण—तिर्यञ्च १३४॥ लाख कोटि, एकेन्द्रिय ६७ लाख कोटि, पंचेन्द्रियतिर्यञ्च ४३॥ लाख कोटि, पंचेन्द्रिय १०६॥ लाख कोटि, विकलत्रय २४ लाख कोटि, जोड़ करनेपर होते हैं, इसी तरह अन्य लगा लेना चाहिये ।

प्रकरणके योग्य सक्षिप्त नयविवरण—

नय—ज्ञाताके अभिप्रायको नय कहते हैं ।

अध्यात्मज्ञानके प्रयोजक नयके प्रकार—नय ४ प्रकारके हैं—१. व्यवहार नय, २. अशुद्धनिश्चय नय, ३. शुद्धनिश्चय नय, ४. परमशुद्धनिश्चय नय ।

१. व्यवहारनय—दो या अनेक द्रव्योंके सम्बन्धसे होने वाली व्यञ्जन पर्याय देखना, अन्यके निमित्तसे होने वाली नैमित्तिक पर्याय देखना व्यवहार नय है । जैसे कर्मके उदय से राग हुआ है, जीव शरीरमें बद्ध है, जीव नार की है, जीव तिर्यञ्च है आदि अभिप्राय व्यवहार नय है ।

२. अशुद्ध निश्चयनय—किसी एक द्रव्यकी विभाव पर्यायको उसी एक द्रव्यमें देखना अशुद्धनिश्चय नय है । जैसे आत्माका राग है, आत्माका विकल्प है आदि ।

३. शुद्धनिश्चय नय—किसी एक द्रव्यकी स्वभाव पर्यायको उसी एक द्रव्यमें देखना शुद्ध निश्चय नय है । जैसे जीवका केवल ज्ञान है, जीवका अनन्त सुख है आदि ।

४. परम शुद्ध निश्चय नय—पर्यायकी व गुण भेदकी दृष्टि न करके मात्र स्वभाव या अनाद्यानन्त केवल द्रव्यको देखना परम शुद्ध निश्चयनय है । जैसे—आत्मा चैतन्य मात्र है आदि ।

विशेष—एक उपाचरनय भी कहलाता है जो एक वस्तुका किसी अत्यन्त भिन्न याने असांयुक्त रूपसे वस्तुमें सम्बन्ध बनाता है जैसे कि मकान

मेरा है, पुत्र मेरा है, इत्यादि. किन्तु इसकी चर्चाकी बुद्धिमानों में जरा भी प्रतिष्ठा नहीं है। अतः इस नया-भासके सम्बन्धमें कुछ भी विचार नहीं करना है।

जीवस्थानचर्चके विषयोंका आध्यात्मिक विवरण

जीवस्थान चर्चामें गुणस्थान आदि जिन जिन विषयोंका वर्णन किया है वे सब पर्यायें हैं। पर्यायें शक्तिकी कहलाती है। ये सब पर्यायें जीव द्रव्य के किन किन गुणोंकी हैं, इसका नक्शा द्वारा विवरण करते हैं—यहाँ समझने की बात यह है कि जैसे द्रव्य अनादिनिघन है वैसे ही गुण भी अनादिनिघन है किन्तु पर्यायें सादि सान्त होती हैं। सन्तान प्रवाहरूपमें भले ही कोई पर्याय अनादि या अनन्त अथवा अनादि अनन्त हो, किन्तु सूक्ष्मतासे वे भी समय समयवर्ती हैं। इसमें सुख गुण व क्रियावती शक्तिकी पर्यायोंका पृथक् वर्णन नहीं है।

गुण

पर्यायें

(सहज) ज्ञान—ज्ञानमार्गणा सब, संज्ञित्व मार्गणा, ज्ञानोपयोग, क्षायिक-ज्ञान, क्षायोपशमिक ज्ञान ४ अज्ञान ३, औदयिक अज्ञान, केवली।

(सहज) दर्शन—दर्शनमार्गणा सब, दर्शनोपयोग, क्षायिक दर्शन (केवल दर्शन), क्षायोपशमिक दर्शन ३।

(सहज) सुख—सात्ता, असात्ता, अस्त्रीय आनन्द।

(सहज) वीर्य—क्षायोपशमिक लब्धि ५, क्षायिक लब्धि ५।

(सहज) श्रद्धा—सम्यक्त्व मार्गणा सब, औपशमिक सम्यक्त्व भाव, क्षायिक सम्यक्त्व भाव, वेदक सम्यक्त्व भाव, मिथ्यात्व भाव, मिथ्यात्व गुणस्थान, मिश्र गुणस्थान, अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान।

(सहज) चारित्र—वेदमार्गणा सब, कषायमार्गणा सब, संयम मार्गणा सब, ध्यान सब, अविरति आसन्न, क्षायिक चारित्र, औपशमिक

चारित्र, क्षायोपशमिक चारित्र, संयमसंयम, कषाय, लिङ्ग, असंयम, संज्ञा ४, अतीतसंज्ञ, सासादन गुणस्थान, ५वें से १४ वें गुणस्थान तक ।

प्रदेशवत्त्व— स्वभावव्यञ्जन पर्याय, (गतिरहित, इन्द्रिय रहित, काय-रहित, अनाहारक) अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीत-प्राण । विभावव्यञ्जन पर्याय (गति ४, इन्द्रियजाति ५, काय ६, अहारक) जीवसमास १४, पर्याप्ति ६, प्राण १०, कुल १९७॥ लाख कीटि, अवगाहना ।

योग शक्ति— योगभार्यणा संब, लेख्यामार्गणा संब ।

सर्व शक्तियाँ— पारिस्सामिक भाव, भव्यत्वमार्गणा, असिद्ध, सिद्ध, क्षेत्रान्त-रिक्त होना, स्थिर होना ।

नोट— (१) जहाँ विग्रह गति, ऋजु गति, समुद्धात आदिका वर्णन आया है, वहाँ उन्हें क्रियावती शक्तिकी पर्याय समझना ।

(२) पर्यायोंमें जहाँ आकुलता, अनाकुलताको विकासकी प्रमुखता से विचारितों वहाँ सुख गुणकी पर्याय समझना । योनि व कुलको पुद्गल की पर्यायें जानना ।

कषायोंको विशेषरूपसे जाननेके लिये इस तक्शेका आश्रय लेवें—

नाम व भेद	सामान्याङ्क
कषाय १६	(१६)
हास्यादि ४	(४)
वेद ३	(३)
भय १	(१)
जुगुप्सा १	(१)
जोड़ २५	(२५)

प्राप्तियोंको विशेषरूपसे समझनेके लिये इस नक्षत्रोका आश्रय लेवें :-

नाम व भेद	सामान्यालाप
मिथ्यात्व	५
विषय अविरति	६
काय अविरति	६
कषाय	१६
हास्यादि	४
वेद	३
भय	१
जुगुप्सा	१
योग	१५
जोड़	५७

भावोंको विशेषरूपसे जाननेके लिये इस नक्षत्रोका आश्रय लेवें—

नाम व भेद	सामान्यालाप
श्रीपशमिक	२
स्वायिक	६
स्वायो० ज्ञान	४
अज्ञान	३
दर्शन	३
योग	२१

नाम	व	श्रेष्ठ	सामान्यालाप
पिछला योग	२१		
लब्धि	५		
वेदक सम्यक्त्व	१		
सरागजादिक	१		
संयमासंयम	१		
श्रीवयिक गति	४		
कषय	४		
मिद्ध	३		
मिथ्यात्व	१		
अज्ञान	१		
असंयम	१		
असिद्ध	१		
लेख्या	६		
पारिशर्गिक	३		
कुल जोड़	५३		

जीवस्थानोंको घटित करने के लिये कुछ ज्ञातव्य

१—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और नारकी तथा सब प्रकार के लब्ध्यपर्याप्तक ये सब जीव नियमसे नष्ट तक ही होते हैं ।

२—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय व

नारकी जीव इन सब जीवोंके ३ अशुभ (कृष्ण, नील, कापोत) लेख्यायें ही होती हैं ।

३—औदारिक शरीर—मनुष्य और तिर्यञ्चोंके ही होता है । तथा वैक्रियक शरीर देव और नारकियोंके ही होता है ।

४—तिर्यञ्च गतिमें क्षायिक—सम्यग्दृष्टि जीव भोग—भूमिज तिर्यञ्चोंमें ही मिलेंगे और वहाँ भी वे तिर्यञ्च क्षायिक—सम्यग्दृष्टि हैं जिन्होंने पहिलेके मनुष्य भवमें क्षायिक—सम्यक्त्व उत्पन्न किया और उससे पहिले तिर्यञ्च आयुका बन्ध किया हो ।

५—जो मनुष्य क्षायिक—सम्यक्त्व उत्पन्न करनेसे पहिले नरक आयुका बन्ध करले, वह क्षायिक—सम्यक्त्व सहित पहिले नरकमें उत्पन्न होता है ।

६—देव गतिमें नपुंसक वेद नहीं होता ।

७—देव गतिमें पर्याप्तके तो ३ शुभ लेख्या होती हैं और अपर्याप्तके भी ३ शुभ लेख्या होती हैं, किन्तु छोटे देवोंमें (भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषीमें) अपर्याप्तके ३ अशुभ लेख्या भी हो सकती हैं, इस कारण देवगतिके सामान्य आलापमें ६ लेख्यायें कही गई हैं ।

८—देव गतिमें क्षायिक—सम्यक्त्व उत्पन्न नहीं होता । क्षायिकसम्यग्दृष्टि मनुष्य मरकर देव बनता है तो वह भी वहाँ क्षायिक—सम्यग्दृष्टि है ।

९—एकेन्द्रिय पर्याप्तमें पहिला गुणस्थान होता है । कोई पचेन्द्रिय जीव दूसरे गुणस्थानमें मरकर एकेन्द्रियमें उत्पन्न हो तो उसके अपर्याप्त—अवस्थामें दूसरा गुणस्थान रह सकता है । इस कारण एकेन्द्रियके सामान्य आलापमें २ गुणस्थान बताये हैं । इसी तरह द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पचेन्द्रिय में भी जानना ।

१०—कुअवधिज्ञान, चारों मनोयोग, सत्य वचनयोग, असत्यवचनयोग और

उभयवचनयोग संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तके ही हो सकता है ।

- ११—सासादन गुणस्थानमें मरकर जीव—नरकगतिमें; सूक्ष्म एकेन्द्रियमें; अन्निकायमें और वायुकायमें उत्पन्न नहीं होता ।
- १२—तीसरे गुणस्थानमें मरण नहीं होता । इस कारण इसमें मिश्रकाय-योग व कार्माण काययोग नहीं होता तथा इसी कारण इस मिश्रगुण-स्थान में अपर्याप्त अवस्था भी नहीं होती ।
- १३—क्षायोपशमिक—सम्यग्दृष्टि जीव श्रेणीपर नहीं चढ़ता है । श्रेणीपर चढ़नेके लिए उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व उत्पन्न करना होगा या क्षायिकसम्यक्त्व उत्पन्न करना होगा ।
- १४—क्षायिक—सम्यग्दृष्टि जीव उपशम श्रेणी व क्षपक श्रेणी दोनोंमें किसी पर चढ़ सकता है किन्तु द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि जीव केवल उपशम श्रेणीपर ही चढ़ सकता है ।
- १५—अपर्याप्त अवस्थामें—मनोबल; वचनबल; श्वासोच्छ्वास; मनोयोग; वचनयोग; औदारिक काययोग; वैक्रियक काययोग; आहारक काययोग, कुम्भविज्ञान; मनःपर्यय ज्ञान; परिहार — विशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, संयमासंयम और मिश्र गुणस्थान नहीं होते ।
- १६—अनुभय वचनयोग पर्याप्त द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय असंज्ञी पंचेन्द्रिय के भी होता है ।
- १७—प्रथमोपशम—सम्यक्त्वमें तो मरण नहीं होता और द्वितीयोपशम—सम्यक्त्वमें मरण हो तो देव गतिमें उत्पन्न होता है । इस कारण वैक्रियक मिश्र काययोगमें तो उपशम सम्यक्त्व (द्वितीयोपशम—सम्यक्त्व) हो सकता है । किन्तु, औदारिक मिश्रकाय योगमें उपशम सम्यक्त्व नहीं हो सकता ।
- १८—आहारक—काययोग—युगल, वेदद्विक (नपुंसक और स्त्री वेद) मनः पर्यय ज्ञान, परिहारविशुद्धि, उपशम सम्यक्त्व इनमें से अगर कोई

एक हो तो बाकीके चार नहीं होते, किन्तु द्वितीयोपशम—सम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान हो सकता है और उपशम सम्यक्त्वके साथ वेद-युगल (नपुंसक वेद व स्त्रीवेद) भी हो सकता है ।

१९—कार्माणि काय योगमें तथा अयोगमें अनाहारक ही होता है ।

२०—सूक्ष्मक्रिया प्रतिगती युक्त ध्यान १३वें गुणस्थानके अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में ही होता है जब कि वादरक्तप्रयोग का भी निरोध हो चुकता है, इससे पहिले नहीं ।

११. उपशान्तमोह चारित्रमोहकी समस्त प्रकृतियोंके उपशमके निमित्तसे होता है ।

१०. सूक्ष्मसास्पराय चारित्रमोहकी प्रकृतियोंके उपशमके निमित्तसे होता है ।

९. अनिवृत्तिकरण चारित्रमोहनीयकी प्रकृतियोंके उपशमके निमित्तसे होता है ।

८. अप्रवृत्तिकरण चारित्रमोहनीयके उपशमके परिणामके निमित्तसे होता है ।

१४ अयोगकेवली योगके अभावके निमित्तसे होता है ।

१३. सयोगकेवली प्राप्ति या कर्मोंके हो जाने पर योगके सद्भावके निमित्तसे होता है ।

१२ चारित्रमोहकी समस्त प्रकृतियोंके क्षयके निमित्तसे होता है ।

१०. चारित्रमोहकी प्रकृतियोंके क्षयके निमित्तसे होता है ।

९. चारित्रमोहनीयकी प्रकृतियोंके क्षयके निमित्तसे होता है ।

८. चारित्रमोहनीयके क्षयके परिणामके निमित्तसे होता है ।

उपशम श्रेणी—
के
गुणस्थान

क्षय श्रेणी—
के
गुणस्थान

- ७—संज्वलनके मन्द उदय सहित प्रत्याख्यानावरणके क्षयोपशमके निमित्त से होता है ।
- ६—प्रत्याख्यानावरणनामक चारित्रमोहके क्षयोपशमके निमित्तसे होता है ।
- ५—अप्रत्याख्यानावरणनामक चारित्रमोहके क्षयोपशमके निमित्तसे होता है ।
- ४—दर्शनमोहके उपशम, क्षयोपशम, या क्षयके निमित्तसे होता है ।
- ३—सम्यग्मिथ्यात्वनामक दर्शनमोहके उदयके निमित्तसे होता है ।
- २—दर्शनमोहकी अपेक्षा पारिणामिकताके निमित्तसे होता है ।
- १—मिथ्यात्व नामक दर्शन मोहके उदयके निमित्तसे होता है ।

लघु जीवस्थानचर्चा (छब्बीसठाणा) की संदृष्टियोंके आद्य ज्ञातव्य

- १—इसके नक्शोंमें शीर्षक वाले स्थानके आधारमें २६ स्थानोंको घटित करना चाहिये ।
- २—इन नक्शोंमें केवल सामान्यालापका वर्णन है, सो उस स्थानमें अधिकसे अधिक जो हो उसका निरूपण किया गया है ।
- ३—प्रवाचनामें या नक्शोंमें जहाँ जहाँ पहिली व बादकी संख्याके बीच डेस (—) का चिन्ह लगा हो वहाँ पहिली व बादकी तथा बीचकी संख्याओं के तत्त्व सब यथासम्भव लगाना चाहिये ।
- ४—जहाँ अल्पविराम (,) लगाकर संख्यायें लिखी हैं वहाँ वे ही लेना चाहिये बीच की संख्या नहीं लेना ।
- ५—नक्शोंमें अर्द्धविराम (;) लगाकर जहाँ अनेक संख्या लिखी हों उनको भिन्न-भिन्न अपेक्षासे घटित करना चाहिये ।

जीवस्थानोंकी प्रवाचना

नोट-इन स्थानोंके नामके ऊपर जो अङ्क लिखे हैं, उस स्थानमें कितने गुण स्थान हैं इसके सूचक हैं । ० इस निशानका अर्थ सिद्ध जानना ।

गुण-स्थान १४

१. मिथ्यात्व, २. सासादन सम्यक्त्व, ३. मिश्र सम्यक्त्व (सम्य-
मिथ्यात्व), ४. अविरत-सम्यक्त्व, ५. देशविरत, ६. प्रमत्तविरत,
७. अप्रमत्तविरत, ८. अपूर्वकरण, ९. अनिवृत्तिकरण, १०. सूक्ष्मसाम्पराय,
११. उपशान्तमोह, १२. क्षीणमोह, १३. सयोगकेवली, १४. अयोगकेवली ।

जीव-समास १४

(गुणस्थान १) (१-२)

१. बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, २. बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, ३. सूक्ष्म-
(१) (१) [१]
एकेन्द्रिय पर्याप्त, ४. सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त, ५. द्वीन्द्रिय पर्याप्त,
[१-२] [१] [१-२]
६. द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, ७. त्रीन्द्रिय पर्याप्त, ८. त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, ९. चतु-
[१] [१-२] [१]
रिन्द्रिय पर्याप्त, १०. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, ११. असंज्ञी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्त,
[१-२] (१-१४)
१२. असंज्ञी-पंचेन्द्रिय-अपर्याप्त, १३. संज्ञी-पंचेन्द्रिय पर्याप्त, १४. संज्ञी-
[१, २, ४, ६, १३]
पंचेन्द्रिय-अपर्याप्त ।

पर्याप्ति ६

१. आहारपर्याप्ति, २. शरीर-पर्याप्ति, ३. इन्द्रिय-पर्याप्ति, ४. इवा
लोच्छ्वास-पर्याप्ति, ५. भाषा-पर्याप्ति, ६. मनःपर्याप्ति ।

प्राण १०

[१-१२] [१-१२] [१-१२] [१-१२]

१. स्पर्शान्द्रिय, २. रसान्द्रिय, ३. घ्राणान्द्रिय, ४. चक्षुरिन्द्रिय,

[१-१२] [१-१२] [१-१३] [१-१३] [१-१४]

५. कर्णान्द्रिय, ६. मनोबल, ७. बचनबल, ८. कायबल, ९. आयु, और

[१-१३]

१०. स्वासोच्छ्वास ।

संज्ञा ४

[१-६] [१-८] [१-६] [१-१०]

१. आहारसंज्ञा, २. भयसंज्ञा, ३. मथुनसंज्ञा, ४. परिग्रहसंज्ञा ।

गति ४, गति-मार्गणा ५

[१-४] [१-५] [१-१४] [१-४]

१. नरकगति, २. तियञ्चगति, ३. मनुष्यगति, ४. देवगति,

[० (सिद्ध)]

५. गतिरहित (मिद्ध-गति) ।

इन्द्रिय जाति ५, इन्द्रिय-जाति-मार्गणा ६

[१-२] [१-२] [१-२] [१-२]

१. एकेन्द्रिय, २. द्वीन्द्रिय, ३. त्रीन्द्रिय, ४. चतुरिन्द्रिय, ५. पञ्च-

[१-१४] [० (सिद्ध)]

न्द्रिय, ६. इन्द्रियरहित (सिद्ध)

काय ६, काय मार्गणा ७

[१-२] [१-२] [१] [१]

१. पृथ्वीकाय, २. जलकाय, ३. अग्निकाय, ४. वायुकाय, ५. वन-

[१-२] [१-१४] [० (सिद्ध)]

स्पति काय, ६. व्रसकाय, ७. कायरहित ।

योग १५. योग-मार्गणा १६

- [१-१३] [१-१२] [१-१२] [१-१३]
 १. सत्यमनोयोग, २. असत्यमनोयोग, ३. भयमनोयोग, ४. अनुभय-
 [१-१३] [१-१२] [१-१२]
 मनोयोग, ५. सत्यवचनयोग, ६ असत्यवचनयोग, ७. उभयवचनयोग,
 [१-१३] [१-१३] [१, २, ४, १३]
 ८. अनुभववचनयोग, ९ औदारिककाययोग, १०. औदारिकमिश्रकाययोग,
 [१-४] [१, २, ४] [६]
 ११. वैक्रियकाययोग, १२. वैक्रियमिश्रकाययोग, १३. आहारक काय-
 [६] [१, २, ४, १३]
 योग १४. आहारकमिश्रकाययोग, १५. कर्माणकाययोग और १६. योग-
 [१४ और ०]
 रहित ।

वेद ३, वेद मार्गणा ४

- [१-६] [१-६] [१-६] [६-१४, ०]
 १. पुरुषवेद, २. स्त्रीवेद, ३. नपुंसकवेद, ४. अपगतवेद ।

कषाय २५, कषाय-मार्गणा २६

- ← [१-२] →
 १-४ अनंतानुबन्धी-क्रोध, मान, माया, लोभ ।
 [१-४] अथवा [२-४]
 ५-८. अप्रत्याख्यानावरण—क्रोध, मान, माया, लोभ ।
 [१-४] अथवा [५]
 ९-१२ प्रत्याख्यानावरण—क्रोध, मान, माया, लोभ ।
 [१-१०] व [६-६] [६-१०]
 १३-१६—संज्वलन-क्रोध, मान, माया, लोभ ।

← [१-८] →

१७ हास्य, १८ रति, १९ अरति, २० शोक, २१ भय.

[१-८] [१-९] [१-९] [१-९]

२३ जुगुप्सा, २३ पुरुषवेद, २४ स्त्रीवेद, २५ नपुंसक वेद,
[११-१४ और ८]

२६ कषायरहित ।

ज्ञान ५, ज्ञान-मार्गणा ८

[४-११] [४-१२] [४-१२] [६-१२]

१. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४ मनःपर्ययज्ञान,

[१३, १४ और ८] [१-३] [१-३] [१-३]

५. केवलज्ञान, ६. कुमतिज्ञान, ७. कुश्रुतज्ञान, ८. कुअवधिज्ञान ।

संयम ५, संयम-मार्गणा ८

[६-९] [६-९] [६-७]

१. सामायिक, २. छेदोपस्थापना, ३. परिहार विशुद्धि, ४. सूक्ष्म-

[१०] [११-१४] [१-४] [५]

साम्पराय, ५. यथाख्यातचारित्र, ६. असंयम, ७. सांयमासंयम, ८. असंयम,
[८ सिद्ध]

संयम, सांयमासंयम इन तीनों से रहित ।

दर्शन ४, दर्शन-मार्गणा ४

[१-१२] [१-१२] [४-१२] [१३, १४, ८]

१. चक्षुर्दर्शन, २. अचक्षुर्दर्शन, ३. अवधिदर्शन, ४. केवलदर्शन ।

लेश्या ६, लेश्या-मार्गणा ७

[१-४] [१-४] [१-४] [१-७]

१. कृष्णलेश्या, २. नीललेश्या, ३. कापोतलेश्या, ४. पीत-लेश्या,

[१-७] [१-१३] [१४ और ८]

५. पद्मलेश्या, ६. शुक्ललेश्या, ७. लेश्यारहित ।

भव्यत्व-मार्गणा ३

[१-१४] [१] [०]

१. भव्य, २. अभव्य, ३. अनुभव ।

सम्यक्त्व ३, सम्यक्त्व-मार्गणा ६

[४-११] [४-७] [४, १४ और ०]

१. औपशमिक, २. क्षायोपशमिक (वेदक), ३. क्षायिक-सम्यक्त्व,

[१] [२] [३]

४. मिथ्यात्व, ५. सासादन, मिश्र (सम्यग्मिथ्यात्व) ।

संज्ञी-मार्गणा ३

[१-१२] [१-२] [१३, १४ और ०]

१. संज्ञी, २. असंज्ञी, ३. अनुभव । (न संज्ञी और न असंज्ञी) ।

आहारक-मार्गणा २

[१-१३] [१, २, ४, १३, १४ और ०]

१. आहारक, २. अनाहारक ।

उपयोग २

[१-१२] [१३, १४ और ०]

१. ज्ञानोपयोग, २. दर्शनोपयोग । (a) क्रमशः (b) युगपत् ।

ध्यान १६

(a) आर्तध्यान ४, (b) रौद्रध्यान ४, (c) घर्मध्यान ४, (d)

शुक्लध्यान ४ ।

[१-६]

[१-६]

(a) आर्तध्यान ४—१. दृष्टवियोगज, २. अनिष्टसंयोगज, ३. वेदना-

[१-६] [१-५]

प्रभव, ४. निदान ।

[१-५] [१-५] [१-५]
(b) रौद्र ध्यान ४—५. हिसानन्द, ६. मृषानन्द, ७. चौरानन्द, ८.

[१-५]
विषयसंरक्षणानन्द ।

[४-७] [४-७]
(c) धर्म-ध्यान ४—९. आज्ञाविचय, १०. अपायविचय, ११. विपाक-
मुख्यतया [५-७] [४-७] मुख्यतया [३-७]
विचय, १२. संस्थानविचय ।

[८-११३] [१२]
(d) शुक्लध्यान ४—१३. पृथक्त्ववितर्कत्रीचार, १४. एकत्ववितर्क-अवी-
[१३]

चार, १५. सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती, १६. व्युपरत
[१४]

क्रिया निवृत्ति ।

आश्रव ५७

(१) मिथ्यात्व ५, (२) अविरति १२, (३) कषाय २५, (४) योग १५ ।

[१] [१]

(१) मिथ्यात्व ५—(१) एकान्तमिथ्यात्व, (२) विपरीत मिथ्यात्व,

[१] [१]

(३) संशय मिथ्यात्व, (४) विनय मिथ्यात्व, (५)

[१]

अज्ञानमिथ्यात्व ।

(२) अविरति १२—(a) काय-अविरति—६ (b) विषय-अविरति—६ ।

[१-५] [१-५]

(३) कायअविरति ६—(६) पृथ्वीकाय-अविरति, (७) जलकाय-अविरति,

[१-५] [१-५]

(८) अग्निकाय-अविरति, (९) वायुकाय-अविरति,

[१-५] [१-४]
(१०) वनस्पतिकाय-अविरति, (११) असकाय-
अविरति ।

[१-५]

(d) विषयअविरति ६—(१२) स्पर्शनेन्द्रियविषय-अविरति, (१३) रस-

[१-५]

[१-५]

नेन्द्रियविषय — अविरति, (१४) घ्राणैन्द्रिय

[१-५]

विषय-अविरति, (१५) चक्षुरिन्द्रिय विषय-अविरति

[१-५]

(१६) कर्णैन्द्रिय विषय-अविरति, (१७) मनोविषय-

[१-५]

अविरति ।

(३) कषाय २५—इनका वर्णन कषायमार्गणा में हो चुका है ।

(४) योग १५—इनका वर्णन योगमार्गणा में हो चुका है ।

भाव ५३

(a) औपशमिक—२ (b) क्षायिक—६, (c) क्षायोपशमिक—१८, (d)
औदयिक—२१, (e) पारिणामिक—३ ।

[४-११]

[८-११]

(a) औपशमिक भाव २—(१) औपशमिक सम्यक्त्व, (२) औपशमिक
चारित्र ।

[१३, १४, और सिद्ध] [१३, १४ और सिद्ध]

(d) क्षायिक भाव ६—(३) क्षायिक ज्ञान, (४) क्षायिक दर्शन (५)

[१३, १४]

[१३, १४]

[१३-१४]

क्षायिकदान, (६) क्षायिक लाभ, (७) क्षायिक

[१३-१४]

[१३, १४, सिद्ध]

भोग, (८) क्षायिक उपभोग, (९) क्षायिकवीर्य,

[४-१४, सिद्ध] [८-१०, १२-१४, ०]
(१०) क्षायिक सम्यक्त्व, (११) क्षायिक चारित्र ।

[४-१२] [४-१२]

(b) क्षायोपशमिक भाव १८—(१२) ज्ञान-४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान,

[४-१२] [६-१२]

अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान ।

[१-३] [१-३] [१-३]

(१६-१८)—अज्ञान ३—कुमति, कुश्रुत, कुअवधि ।

[१-१२] [१-१२] [४-१२]

(१९-२१)—दर्शन ३—चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन ।

—————[१-१२]—————

(२२-२६)—लब्धि ५—क्षायोपशमिक-दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य ।

[४-७]

[६-७]

[५]

(२७) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व, (२८) क्षायोपशमिकचारित्र (२९) संयमा-
संयम ।

[१-४]

[१-५]

(d) औदयिक भाव २१—गति ४ (३०) नरक, (३१) तिर्यञ्च, (३२)

[१-१४]

[१-४]

मनुष्य, (३३) देव ।

[१-६]

[१-६]

[१-६]

[१-१०]

कषाय ४ (३४) क्रोध, (३५) मान, (३६) माया, (३७) लोभ ।

[१-६]

[१-६]

[१-६]

लिङ्ग ३ (३८) पुरुषवेद, (३९) स्त्रीवेद, (४०) नपुंसकवेद ।

[१]

[१-१२]

[१-४]

[१-१४]

(४१) मिथ्यादर्शन, (४२) अज्ञान, ४६-असंयम, ४४-असिद्धत्व ।

[१-४] [१-४] [१-४] [१-७] [१-७]
लेख्या ६-(४५) कृष्ण, ४७-नील, ४७-कापोत, ४८-पीत, ४९-पद्म,

[१-१३]

५०-शुक्ल ।

[१, १४, ०]

[१-१४]

() पारिणामिक-भाव ३-(५१) जीवत्व, (५२) भव्यत्व, (५३)

[१]

अभव्यत्व ।

२४—अवगाहना

गनाङ्गुलके असख्यातवें भागसे लेकर १००० योजन तक ।

२५ जाति

जाति ८४ लाख ।

२६—कुल

२६ कुल १९७॥ लाख कोटि ।



जीवस्थानचर्चा के विषयों का नक्शों द्वारा विवरण प्रारम्भ

(नोट :- जिसमें जिस स्थानके गुणस्थान नम्बर नहीं मिलते हैं वे स्थान उसमें नहीं होते यह अवाधित है, किन्तु जिसमें जिस स्थान के गुणस्थान नम्बर मिल जाते हैं वे उसमें हो भी सकते, नहीं भी हो सकते । यह निर्णय करने के लिये पहिले जो १८ नियम दिये गये हैं उनसे सहायता लेना चाहिये)

(४६)

मिथ्यात्व गुणस्थान मे

स्थान	सामान्या- लाप	मक्षिप्त विवरण
मुखस्थान	१	मिथ्यात्व
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गतिरहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	५	अतीन्द्रिय बिना
कायमार्गणा	६	अकाय बिना
योगमार्गणा	१३	५० ४० ४० २० २०
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	२५	अक्षय बिना
ज्ञानमार्गणा	१३	कुमति कुश्रुत कुश्रवधि
संयममार्गणा	११	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	२	आर्त ४, खेद्र ४
आश्रय	५५	आहारक काय योग २ बिना
भाव	३४	क्षायोपश. १०, श्रौव. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	घना० अर्ध-भागसे १००० बोधवत्तक
योनि	—	६४ लाख
कुल	—	१९७॥ लाख कोटि

सासादन गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सासादन सम्यक्त्व
जीवसमास	७	सं० ५० ५ १ अपर्याप्त ६
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	५	अतीन्द्रिय बिना
कायमार्गणा	४	जल, पृथ्वी, वनस्पति, वसकाय,
योगमार्गणा	१३	मन ४० ४० २० २ का० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३	कुमति कुश्रुत कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु
लेख्यामा०	६	लेखा रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	५	आर्त ४, रीद्र ४
आश्रय	५०	मिथ्यात्व ५ व अहारकयोग २ बिना
भाव	३३	क्षायो १०, ओद २० पारि० २
अवगाहना		घना० अर्ध भाग से १००० योजन
योनि		५६ लाख
कुल		१५७॥ लाख कोटि

सम्यग्मिथ्यात्व (मिश्र) गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मिश्र (सम्यग्मिथ्यात्व)
जीवसमाप्त	१	सं० पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्शणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्शणा	१	त्रसकाय
योगमार्शणा	१०	म० ४व० ४ औ १ वै १
वेदमार्शणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्शणा	२१	अकषाय व अनन्तानुबन्धी ४ बिना
ज्ञानमार्शणा	३	कुमति, कुश्रुत, कुप्रवधि
संयममार्शणा	१	अभयम
दशनमा०	२	चक्षु, अचक्षु
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भच्य
सम्यक्त्वमा०	१	सम्यग्मिथ्यात्व (मिश्र)
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	१	अहारक
उपयोग	२	क्रमसः
ध्यान	८ या ९	आतं ४री० ४, फलकरूप में धर्म० १
आश्रव	४३	योग १० कषाय २१ अविरति १२
भाव	३२	आयोः १०, औद० २० पारि० २
अवपाहना		सख्यात धनगुण से १००० योजनतक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अविरत सम्यक्त्व
जीवसमास	२	स पचेन्द्रिय प०, सं पं अ०,
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	१३	म० ४ व ४ औ २ ब २ का १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसक वेद
कषायमार्गणा	२१	अकषाय, अनन्तानुगंधी ४ बिना
ज्ञानमार्गणा	३	मति, श्रुतं, अवधि ज्ञान
संयममार्गणा	१	अभयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	श्रीपशमिक, क्षायोपं, क्षायिकसम्यक्त्व,
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
अहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२, १०	आर्त४री० ४धर्म४, (मुख्यतया ध०२)
आश्रव	४६	अविरति १२, कषाय २१, योग १३
भाव	३६	औ. १ क्षा. १ क्षायो. १२, औ. २० पारि. २
अवगाहना	—	संख्यात धनान्गुल से १००० योजन तक
योनि	—	२६ लाख
कुल	—	१०६॥ लाख कोटि

देशविरत गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	देश विरत
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	मनुष्य, तिर्यच
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	इसकाय
योगमार्गणा	६	म० ४ व० ४ श्रीदरिककाय योग १
वेदमार्गणा	३	पु. स्त्री. तपुंसक
कषायमार्गणा	१७	प्र. ४, सं ४ हा. ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	३	मति, श्रुत, अवधि
संयममार्गणा	१	संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेख्यामा०	३	पीत, पद्म शुक्ल
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	उपशम, क्षायोप, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आह रक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२, ११	अर्त ४ गौ४धर्म ४ [मुख्यतया धर्म ३]
आश्रव	३७	योग ६ कषाय १७ अवरति ११
भाव	३१	श्री. १क्षा. १क्षायो. १३ श्रीद. १४ पारि. २
अवगाहना	—	सं० घनां से ५२५ धनुषतक
योनि	—	१८ लाख [मनुष्य १४ पशु ४]
कुल	—	५५ लाख कोटि [मनुष्य १२ पशु ४३]

प्रमत्त विरत गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	प्रमत्त विरत
जीवसमास	२	सं० पंचेन्द्रिय ५० अ०
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	११	म० ४ व० ४ श्रीद० १ आहारक २
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपु० सकवेद
कषायमार्गणा	१३	संज्वलन ४ हास्य आदि ६
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	३	सामा०, छेदो०, परिहार विशुद्धि,
दर्शनमा०	३	चक्षु, श्रवण, अवधि दर्शन
लेख्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल लेख्या
भयत्वमा०	१	भय
सम्यक्त्वमा०	३	श्रीपञ्चमिक, क्षायोप., क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
उद्यान	७	आर्त ३ धर्म ४
आश्रव	२४	योग ११ कषाय १३
भाव	३१	श्री.१ क्षा.१ क्षायो.१४ श्रीद.१३ पा.२
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ घनुषतक
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१२ लाख कोटि

अप्रमत्त विरत गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अप्रमत्त विरत
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	३	आहार संज्ञा बिना
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	६	म० ४ वच० ४ औदा० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० न०
कषायमार्गणा	१३	संज्वलन ४, हास्य आदि ६
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	३	सामा० छेदो० परिहारविशुद्धि
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षायोप. क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	४	धर्म ४
आश्रव	२२	योग ६, कषाय १३
भाव	३१	औ. १ क्षा. १ क्षायो. १४ औद. १३ पारि. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ अनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

(५६)

अपूर्वकरण गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अपूर्वकरण
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	३	आहार संज्ञा बिना
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	६	म० ४ व० ४ औ० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुसंकेद
कषायमार्गणा	१३	सज्वलन ४ हास्य आदि ६
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	२	सामायिक छेदोपस्थापना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	१	शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक, क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्व वितर्क विचार (शुक्ल)
आश्रव	२२	योग ६ कषाय १३
भाव	२६	औ.२ क्षा.२ क्षायो.१२ औद.११ पा.२
अवगाहना	२८	३॥ हाथ से ५२५ अनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	अनिवृत्तिकरण
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	२	मैथुन संज्ञा परिग्रह संज्ञा
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	६	मन ४ व. ४ औ. १
वेदमार्गणा	२	सब
कषायमार्गणा	७	संज्वलन ४ पु० स्त्री० नपुंसकवेद
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि मनःपर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	२	सामायिक छेदोपस्थापना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	श्रीपशमिक, आयिकसम्यक्त्व,
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमसः
ध्यान	१	पृथक्त्ववितर्क वीचार (शुक्लध्यान)
आश्रव	१६	योग ६ कषाय ७
भाव	२६	श्री. २क्षा. २क्षायो. १२श्रीद. ११पारि. २
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१२ लाख कोटि

सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सूक्ष्मसाम्पराय
जीवसमाप्त	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	१	परिग्रह संज्ञा
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसंकाय
योगमार्गणा	६	मन ४ व० ४ औदरिककाय योग १
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	संज्वलन लोभ
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	१	सूक्ष्म साम्पराय
दर्शनमा०	३	चक्षु, अन्धक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	१	शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक, क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
व्याप्त	१	पृथक्त्ववितर्क वीचार (शुक्लव्याप्त)
आश्रव	१०	योग ६ कषाय १
भाव	२३	औ. २ क्षा. २ क्षायो. १२ औद. ५ पारि. २
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१२ लाख कोटि

(५६)

उपशांतमोह गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	उपशांतमोह
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	१	अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	६	म० ४, व० ४, औदारिककाययोग१
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि मनःपर्यय ज्ञान
संयममार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
खेद्यामा०	१	शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक, क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	३	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक्त्ववितर्क बीचार शुक्ल ध्यान
आश्रव	६	योग ६
भाव	२१	औ. २क्षा. १क्षायो. १२ औद. ४ पारि. २
अवसाहना		३॥ हाथ से ५२५ अनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

क्षीरामोह गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- माप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	क्षीरामोह
जीवसमास	१	सं० पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	—	अपगत (भ्रतीत)
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	६	मन० ४, व० ४, औदारिककाय योग १
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	४	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	यथास्थित चारित्र
दर्शनमा०	३	चक्षु, श्रवण, अदृष्ट दर्शन
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	२	पहिले पृथक्त्व वितर्कवीचार बाद में एकत्ववितर्क अवीचार
आश्रव	६	योग के ६
भाव	२०	क्षा. २ क्षायो. १२ औद. ४ पारि. २
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ अनुषतक
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१२ लाख कोटि

सयोग-केवली गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	सयोगकेवली
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	४	वचनवल, कायवल, आयु, स्वासोल्लास,
संज्ञा	४	अपगत (अतीत)
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	७	मन २, वच २, ग्री २, कर्माणा १
वेदमार्गणा	१	अज्ञानवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवलज्ञान
संयममार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	१	केवलदर्शन
लेख्यामा०	१	शुक्ल लेखा
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	१	सूक्ष्म क्रिया प्रतिपात्ती शुक्लध्यान
आश्रव	७	योग ७
भाव	१४	क्षायिक ६, ग्री ३, पारिणा २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ धनुष
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

अयोग-केवली गुरुस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	१	आयोगकेवली
जीवसमाप्त	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१	आयु
संज्ञा	×	अपगत संज्ञा (अतीत)
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	अयोग
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	१	यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेख्यामा०	१	लेख्या राहित
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	१	व्युपरत क्रिया निवृत्ति (शुक्लध्यान)
आश्रव	+	आश्रव से अतीत
भाव	१३	का. ६ औद. २ पारि. २
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ घनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

अतीत गुणस्थान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	—	अतीत
जीवसमास	—	अतीत
पर्याप्ति	—	अतीत
प्राण	—	अतीत
संज्ञा	—	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	कायरहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
सयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवलदर्शन
लेख्यामा०	१	लेख्या रहित
भव्यत्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
सजित्वमा०	१	अनुभय
ग्राहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	+	ध्यान रहित
आश्रव	+	आश्रवरहित
भाव	५	क्षायिक ४, जीवत्व १
प्रवगाहता	+	३॥ हाथ से ५२५ अनुष तक
योनि	×	अतीत
कुल	×	अतीत

नरकगति में

स्थान	सामान्या- साप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि०, सा०, मिश्र, अविरत सम्यक्त्व
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	नरक गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असंकाय
योगमार्गणा	११	म० ५, व० ४, वै० २, का० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्याय व केवलज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण, नील, कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२, १०	आर्त४, रौद्र४ धर्म४ (मुख्यता में धर्म २)
आश्रव	५१	मि. ५ अवि. १२ कषाय २३, योग ११
भाव	३३	श्री. १ क्षा. १ क्षायो. १५ श्रीद. १३ परि. ३
अवगाहना		७ धनुष ३ हाथ ६ अंगुल से ५०० धनुषतक
योनि		४ लाख
कुल		२५ लाख कोटि

(६५)

तिर्यग्चगति में

स्थान	सामान्या- माप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	५	मिथ्यात्व, सा०, मिश्र, अवि० देश०
जीवसमाप्त	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यग्चगति
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	११	मन ४ व० ४ श्री० २ का० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्यय केवल-ज्ञान बिना
संयममार्गणा	२	असंयम, संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२, ११	आर्त४ रौद्र४ धर्म४ (मुख्यता में धर्म. ३)
आश्रव	५३	मि. ५ अवि. १२ कषाय २५, योग ११
भाव	३६	श्री. १ क्षा. १ क्षायो १६ औद. १८ पारि. ३
अवगाहना		घना. केअसं. भागसे १००० योजवत्तक
योनि		६२ लाख
कुल		१३४॥ लाख कोटि

मनुष्यगति में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	१४	सब
जीवसमाप्त	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१४	मन ४ वचन ४ औ. २ आहा. २ का. १ व अयोग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	७	सब
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्प्रकृत्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी व अनुभय
आहारकमा०	२	आहाटक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५५	मि. ५ अवि. १२ कषाय २५, योग १३
भाव	५०	औ० गति ३ बिना
अवगाहना		सं.म. घनां.-सं. प.म.३ कोश तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

(६७)

देवगति में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	४	मि० सा० मिश्र अ० सम्यक्त्व
जीवसमाप्त	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	११	म० ४ व० ४ बै० २ का० १
वेदमार्गणा	२	पु०, स्त्री०
कषायमार्गणा	२४	नपुंसक व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२, १०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म४(मुख्यतामेंघ.२)
आश्रव	५२	मि ५ अवि. १२, कषाय २४ योग ११
भाव	३७	श्री. १क्षा. १क्षायो. १५ श्रीद. १७ पारि. ३
अवगाहना		१ हाथ से १५ घनुष तक
योनि		४ लाख
कुल		२६ लाख कोटि

गतिरहित में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	—	अतीत
जीवसमास	—	अतीत
पर्याप्ति	—	अतीत
प्राण	—	अतीत
संज्ञा	—	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	कायरहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवलज्ञान
लेश्यामा०	१	लेश्यारहित
भव्यत्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	धार्मिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	+	ध्यानातीत
आश्रय	+	आश्रयरहित
भाव	५	सा. ४, (ज्ञा. द. स. वीर्य) पा. १ जीवत्व
अवगाहना	+	३॥ हाथ से ५२५ घनुष तक
मोनि	×	अतीत
कुल	×	अतीत

एकेन्द्रियजाति में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	२	मिथ्यात्व, सासादन (सा.अपर्याप्त में)
जीवसमास	४	वादरएकेन्द्रिय ५० अ० सू० ५० अ०
पर्याप्ति	४	आहा. शरीर, इन्द्रिय. स्वासोच्छ्वास
प्राण	४	स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, स्वासोच्छ्वासआयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	५	बसकाय बिना
योगमार्गणा	३	प्रौदारिक के २ कर्माण १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्रीवेद, पुंवेद, अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति, कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेख्यामा०	३	कृष्ण, नील, कापोत लेख्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि०, सा., (अपर्याप्त में सासादन)
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	कमशः
ध्यान	८	आर्त ४, रौद्र ४
आश्रव	३८	मि. ५ अवि. ७ कषाय २३ योग ३
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घर्ना.असं. भाग से १००० योजनतक
योनि	—	५२ लाख
कुल	—	६७ लाख कोटि

द्वीन्द्रिय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण.
गुणस्थान	२	मि० सा० (सासादन अर्थापत्ति में ही)
जीवसमास	२	द्वीन्द्रिय पर्यापत्ति व अपर्यापत्ति
पर्यापत्ति	५	मनःपर्यापत्ति बिना
प्राण	६	स्पर्शन, रसना, काय. वचन. श्वा. आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	द्वीन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	४	अनुभय वचनयोग, १ औ, २ का. १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्रीवेद, पुंवेद अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मिथ्यात्व सासादन (अपर्यापत्ति में)
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४०	मि. ५ अवि. ८ कषाय २३ योग ४
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घनाङ्गलसंख्यातभागसे १२योजनतक
योनि	—	२ लाख
कुल	—	७ लाख कोटि

त्रिन्द्रिय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	२	मिथ्यात्व सासादन अपर्याप्ति में ही
जीवसमास	२	त्रिन्द्रिय पर्याप्ति व अपर्याप्ति
पर्याप्ति	५	मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	७	चक्षु, कर्ण, मनबल बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्य्यचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	त्रिन्द्रियजाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	४	अनुभय वचनयोग १ औ० २ का० १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेख्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेख्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	सासादन (सा. अपर्याप्ति में ही)
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४१	मि ५ अवि. ६ कषाय २३ योग ४
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	धना. सं. भाग से ३ कोश तक
योनि	—	२ लाख
कुल	—	७ लाख कोटि

चतुरिन्द्रिय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि. सासादन (सा. अपर्याप्त में ही)
जीवसमास	२	चतुरिन्द्रिय ५० अ०
पर्याप्ति	५	मनबिना
प्राण	८	कर्ण मनो बल बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	चतुरिन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	४	अनुभय वचन श्री० २ का० १
वेदमार्गणा	१	नपु सकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्री पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु, अचक्षु दर्शन
लेख्यामा०	३	कृष्णनील कापोत
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ गौद्र ४
आश्रव	४२	मि. ५ अवि. १० कषाय २३ योग ४
भाव	२५	क्षायो. १ श्रीद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घना. सं. से १ योजन तक
योनि	—	२ लाख
कुल	—	६ लाख कोटि

(७३)

असंज्ञी पंचेन्द्रिय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिथ्यात्वसासादन(सा.अपर्याप्तिमेंही)
जीवसमास	२	असंज्ञी पंचेन्द्रिय ५०, अपर्याप्ति
पर्याप्ति	५	मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	६	मनोबल बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रियजाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	४	अनुभय वचनयोग १ श्री० २ का०१
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु दर्शन
लेख्यामा०	३	कृष्ण नील कापीत लेखा
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि. सासादन (सा. अपर्याप्ति में ही)
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	४५	मि. ५ अत्रि. ११ कषाय २५ योग ४
भाव	२५	क्षायो. ६ श्रीदयिक १३ पारिणामिक ३
अवगाहना	—	घना. सं. से १००० योजन सेकम तक
योनि		
कुल		

संज्ञी पंचेन्द्रिय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	संयोग केवली अयोग केवली बिना
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय प. व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	मब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	आयोग बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	सूक्ष्मक्रिय. व्युपातक्रिय. बिना
आश्रव	५७	सब
भाव	४६	श्री. रक्षा. रक्षायो. १८ श्रीद. २१ पारि. ३
अवनाहना		सं. घना. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

(७१)

पंचेन्द्रिय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सब
जीवसमास	४	संज्ञी पंचेन्द्रिय व संज्ञी पं. के २-२
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्शणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्शणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्शणा	१	असकाय
योगमार्शणा	१६	सब
वेदमार्शणा	४	सब
कषायमार्शणा	२६	सब
ज्ञानमार्शणा	८	सब
सयममार्शणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
स्वेयामा०	७	सब
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	संज्ञी, असंज्ञी, अनुभव
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युष्पत्
ध्यान	१६	सब
आश्रय	५७	सब
भाव	५३	सब
अवगाहना		घनरं. सं. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कास्ट

इन्द्रिय रहित में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	—	अतीत
जीवसमास	—	अतीत
पर्याप्ति	—	अतीत
प्राण	—	अतीत
संज्ञा	—	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेश्यामा०	१	लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभव
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	०	ध्यानातीत
आश्रय	०	आश्रयरहित
भाव	५	क्षायिक ४, पारिणामिक १ जीवत्व
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ घनुष तक
योनि		अतीत
कुल		अतीत

पृथ्वी कायिक में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	२	मि. सा. (सासादन अपर्याप्त में ही)
जीवसमास	४	एकेंद्रिय संबंधी ४
पर्याप्ति	४	भाषा पर्याप्त व मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	४	स्पर्शन, कायवल, स्वासोच्छ्वास आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्य्यचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	पृथ्वीकाय
योगमार्गणा	३	औदारिककाययोग १ औ. मि. १ कामाणि १
वेदमार्गणा	१	नपुंसक
कषायमार्गणा	२३	स्त्री पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति, कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेख्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेख्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मिथ्यात्व, सासादन, अपर्याप्त
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	कमशः
ध्यान	८	आर्त ४, रौद्र ४
आश्रव	३८	मि. ५ अवि. ७ कषाय २३ योग ३
भाव	२४	क्षायो. ८ औद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घर्नागुल असं. भाग
योनि		७ लाख
कुल		२२ लाख कोटि

जलकाय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिथ्यात्व सासादन अपर्याप्ति
जीवसमास	४	एकेन्द्रिय वादर व सूक्ष्म प० अप०
पर्याप्ति	४	भाषा व मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	४	स्पर्शन, कायबल, स्वासो० आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	जल काय
योगमार्गणा	३	श्रीदा. २ कार्माणुकाय योग १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्रीवेद, पु० वेद व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति कुश्रवधि
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेख्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेख्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सासादन (सा. अपर्याप्ति)
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	३८	मि. ५ अवि. ७ कषाय २३ योग ३
भाव	२४	क्षायो. ८ श्रीद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	धनागु. असं. भाग
योनि	—	४ लाख
कुल	—	७ लाख कोटि

अग्निकायिक में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मिथ्यात्व गुणस्थान
जीवसमास	४	एकेन्द्रिय वा० ५० अ०, सू० ५० अ०
पर्याप्ति	४	भाषा व मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	४	स्पर्शन, काय, श्वासोच्छ्वास, आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्य्यचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	अग्निकाय
योगमार्गणा	३	श्री. २ कार्माणकाय योग १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्री. पु. व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेख्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेख्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	३८	मि. ५ अवि ७ कषाय २३ योग ३
भाव	२४	क्षायो. ८ श्रीद. १३ पारि. ३
अवगाहना		घनां असं. भाग
योनि		७ लाख
कुल		३ लाख कोटि

वायुकाय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	१	मिथ्यात्व
जीवसमास	४	एकेन्द्रिय वादर सू० के प० अ० अप०
पर्याप्ति	४	भाषा व मनःपर्याप्ति बिना
प्राण	४	स्पर्शन, काय, स्वासोच्छ्वास, आयु
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्यचगति
इन्द्रियजातिमा०	१	एकेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	वायुकाय
योगमार्गणा	३	श्रीदा० २ कार्माणकाय योग १
वेदमार्गणा	१	नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्री, पु० व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुभ्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक, अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	अर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	३८	मि. ५ अवि. ७ कषाय २३ योग ३
भाव	२४	क्षायो. ८ श्रीद. १३ पारि. ३
अवगाहना	—	घनां. असं. भाग
योनि		७ लाख
कुल		७ लाख कोटि

(८२)

अस कार्याक में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	१४	सब
जीवसमास	१०	एकेन्द्रिय के ४ बिना
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियजातिमार्गणा	४	एकेन्द्रिय व गति रहित बिना
कायमार्गणा	१	अस
योगमार्गणा	१६	सब
केदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
सयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेख्यमा०	७	सब
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	संज्ञी असंज्ञी अनुभव
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५७	सब
भाव	५३	सब
अवगाहना		घनांगुल सं. भा. से १००० योजन
योनि		३२ लाख
कुल		१०३५ लाख कोटि

काय रहित में

स्थान	सामान्य- लक्षण	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	०	अतीत
जीवसमास	०	अतीत
पर्याप्ति	०	अतीत
प्रारण	०	अतीत
संज्ञा	०	अतीत
गतिमार्गण	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गण	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गण	१	काय रहित
योगमार्गण	१	योग रहित
वेदमार्गण	१	अप्रमत्त वेद
कषायमार्गण	१	अकषाय
ज्ञानमार्गण	१	केवल ज्ञान
संयममार्गण	१	तीनों से रहित
दर्शनम०	१	केवल दर्शन
लेख्यमा०	१	लेख्य रहित
अव्यक्त्यमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्यमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोष	२	युगपत्
ध्यान	०	अतीत
आश्रय	०	आश्रयरहित (अतीत)
भाव	५	क्षायिक ४, पारिण्या. १
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ अनुष तक
योनि	×	अतीत
कुल	×	अतीत

सत्य वचनयोग में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	१३	आयोग केबली बिना
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	चार ब अतीत
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	सत्य वचन योग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	५	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, अनुभय
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः युगपत
व्यान	१५	व्युत्तरत क्रिया निवृत्ति बिना
आश्रय	४३	मि. ५ अवि. १२ कषाय २५ योग १
भाव	५३	सब
अवगाहना	—	घनांगु. सं. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

असत्य वचनयोग में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	सयोग केवली अयोग केवली बिना
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	असत्य वचन योग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
ज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	आर्त ४ रौद्र ४, घ. ४, शु. २।
आश्रव	४३	योग के १४ बिना
भाव	४६	श्री. २क्षा. २क्षायो. १८श्रीद. २१पारि. ३
अवगाहना	—	अंगुल सं. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

औदारिक काययोग

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	१३	अयोग केवली बिना
जीवसमास	७	पर्याप्त के
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	२	तिर्यंच मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय जाति रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१	औदारिक काययोग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	सब
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः युगपत
ध्यान	१५	आ. ४, रौ. ४, धर्म ४, सुकल ३
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	५१	नरक देव गति बिना
श्रवणाहना	—	घनांगुलकेअसं.वेभागसे १००० योजन तक
योनि		७६ लाख
कुल		१४६१ लाख कोटि

श्रीदारिक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्या- लाप	सक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि. सा. अवरति सयोग केवली
जीवसमास	७	सिर्फ अपर्याप्त अवस्था
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	७	मन वच. इकासोच्छ्वास बिना
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्य तिर्यच गति
इन्द्रियजातिमा०	५	अतीन्द्रिय बिना
कायमार्गणा	६	कायरहित बिना
योगमार्गणा	१	श्रीदारिक मिश्र काय योग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	६	मन पर्यय कुग्रवधि बिना
संयममार्गणा	२	असंयम ब्याख्यात चरित्र
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	४	उपशम मिश्र बिना
संज्ञित्वमा०	३	सब
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	कमशः व युगपत
ध्यान	१२, १०	आर्त ४, रौद्र ४ धर्म ४ (मुख्यतया २)
आश्रव	४३	१४ योग बिना
भाव	४५	क्षायिक ६ क्षायो. १४ औद. १६ पारि. ३
अवगाहना	—	धनागुल के असंख्यातवें भाग १०००
यौनि		योजन से कम
कुल		७६ लाख
		१४६॥ लाख कोटि

(११)

वैकृत्यिक काययोग में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मि. सा. मि. अवतरति सम्यक्त्व
जीवसमाप्त	१	संज्ञी पं. व.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	नरक, देव गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	जसकाय
योगमार्गणा	१	वैकृत्यिक काय योग
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	२५	कषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मन पर्यंत व केवल बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रोद्र ४ धर्म २
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	३६	श्री.१क्षा.१ सायो.१५श्रीद.१६ पारि.१
अवगाहना	—	१ हाथ से ५०० धनुष तक
योनि	—	८ लाख
कुल	—	५६ लाख कोटि

वैक्रयिक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्या- लाप	सक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	३	मि. सा. अवगति सम्यक्त्व
जीवसमास	१	सं. पं. अपर्या.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	७	मनःवचन स्वासोच्छ्वास बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	नरक देव गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	१	वैक्रयिक मिश्र काय योग
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	५	मति, श्रुत, अवधि, कुमति, कुश्रुत
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनामा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	५	सम्यज्ञ मिथ्यात्व बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	३८	श्री. १क्षा. १क्षायो. १४ श्रीद. १२ पारि. ३
अवगाहना	—	कुछकम १ हाथसे कुछकम ५०० धनुषतक
योनि		८ लाख
कुल		५१ लाख कोटि

आहारक काययोग में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	मत्त विरत
जीवसमास	१	संज्ञी पं. प.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	संज्ञा रहित बिना
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	१	आहारक काय योग
वेदमार्गणा	१	पुरुषवेद
कषायमार्गणा	११	सं० ४ हास्यादि ७
ज्ञानमार्गणा	३	मति, श्रुति, अवधि
संयममार्गणा	२	सामा० छेदो
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	क्षायोप, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्त ३ धर्म ४
आश्रव	१२	योग १, कषाय ११
भाव	२८	क्षा.१ क्षायो. १३ औद. १२ पारि. २
अवगाहना	—	मु. ३॥ हाथसे ५२५ घ.व.आहा. १ हाथ
योनि	+	१४ लाख
कुल	+	१२ लाख कोटि

आहारक मिश्र काययोग में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	मत्त विरत
जीवसमास	१	स. पं. अपर्याप्ति
पर्याप्ति	६	अपर्याप्ति अवस्था
प्राण	७	मन, वचन स्वासोच्छ्वास बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१	आहारक मिश्र काय योग
वेदमार्गणा	१	पुरुषदेद
कषायमार्गणा	११	सज्वलन ४ हास्यादि ७
ज्ञानमार्गणा	३	मति श्रुति अब.
संयममार्गणा	२	सा. छेदो.
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अविष दर्शन
लेख्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	क्षायोप, क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्त ३, धर्म ४
आश्रव	१२	योग १, कषाय ११
भाव	२८	क्षा. १ क्षायो. १३, औद. १२ पारि. २
अवगाहना	—	मु. ३॥ हाथ से ५२५ घ. व आहा. १ हाथसे कम
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

कार्माण काययोग में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	१, २, ४, १३।
जीवसमास	७	अपर्याप्त के
पर्याप्ति	६	अपर्याप्त
प्राण	७	मन वचन इवासोच्छ्वास बिना
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	सब
इन्द्रियजातिमार्गणा	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	कायरहित बिना
योगमार्गणा	१	कार्माण काययोग
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्यय कुअधि ज्ञान बिना
संयममार्गणा	२	असंयम यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	४	सब
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	५	सम्यग्मिथ्यात्व बिना
संज्ञित्वमा०	३	सब
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	११	आतं ४ रौद्र ४ धर्म २ शुक्ल १
आश्रय	४३	योग १४ बिना
भाव	४८	उप. १ क्षायोप ६ (मनःकुअ. संज्ञ. संयमा)
		बिना
धवगाहना	—	घनांगुल के असंख्यातवे भागसे १०००
		योजन तक
योनि		८४ लाख
कुल		१६७। लाख कीटि

योग रहित में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	१४ व अतीत
जीवसमास	१	अ० व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१	आयु व अतीत
संज्ञा	—	अतीत संज्ञा
गतिमार्गणा	१	मनुष्य व गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	अस व काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल-ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यात चा० तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेख्यामा०	१	लेख्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत
ध्यान	१	व्युपरत क्रिया निवृत्ति व रहित
आश्रव	—	अतीत आश्रव
भाव	१३	क्षायि. ६ ओदा. २ पारिणा. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ घनुष तक
योनि		१४ लाख व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व अतीत

पुरुषवेद में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	६	(१-६)
जीवसमास	४	पंचेन्द्रिय संबंधी ४
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	३	नष्टक गति बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	१	पुरुषवेद
कषायमार्गणा	२३	स्त्री० पु० अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	सूक्ष्म, यथा० बिना
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
ग्राह्यकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
व्यक्त	१३	शुक्ल के अन्तिम ३ बिना
आश्रय	५५	स्त्री नपु० वेद बिना
भाव	४३	श्री. २ क्षा. २ क्षायो. १ दशोद. १ दपारि. ३
अवगाहता	—	संख्यात धनांगुल से ३ कोश तक
योनि	—	२२ लाख
कुल	—	८१॥ लाख कोटि

स्त्रीवेद में

स्थान	समान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	६	(१-६)
जीवसमास-	४	असंज्ञी संज्ञी पं. अ.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब अतीत बिना
गतिमार्गशा	३	नरक, गति बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गशा	१	वसकाय
योगमार्गशा	१३	आहारक २ योग रहित बिना
वेदमार्गशा	१	स्त्रीवेद
कषायमार्गशा	२३	पु० न० व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गशा	६	मनःपर्यय, केवल ज्ञान बिना
संयममार्गशा	४	सामा. छेदो. असंयम संयमासंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	शुक्ल ध्यान ३ बिना
आश्रव	५३	आहारक २ पु. १ न १ बिना
भाव	४२	आ. ७ क्षायो. १ औद. ३ बिना
अवगाहन		सं. वनां. से ३ कोश तक
योनि		२२ लाख
कुल		१८॥ लाख कोटि

(१६)

नपुंसकवेद में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	६	(१-६)
जीवसमाप्त	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	३	नरक तिर्यच व मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमागणा	१३	आहारक २ व योग रहित बिना
वेदमार्गणा	१	नपुंसक वेद
कषायमार्गणा	२३	पु. स्त्री. श्रकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्येय व केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	४	सामा. छेदो. असंयम, संयमासंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	शुक्ल ३ बिना
आश्रव	५३	मि. ५ अचिरति १२ कषाय २३ योग १३
भाव	४२	श्री. २क्षा. २क्षायो. १७ श्रीद. १८ पारि. ३
अवगाहना	—	अंगुलके असं. भागसे १००० बोजन तक
योनि	—	८० लाख
कुल	—	१७१॥ लाख कोटि

(१००)

अपगतवेद में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	६	६ से १४ तक व अतीत
जीवसमाप्त	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१०	सब
संज्ञा	२	परिग्रह संज्ञा व अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्य गति व गति रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	असकाय व काय रहित
योगमार्गणा	१२	आहारक २ व २ बिना
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	४	संज्वलन ४ अकषाय
ज्ञानमार्गणा	५	३ कुज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	सामा. छेदो. सूक्ष्म, यथा, व तीनोंसे रहित
दर्शनमा०	४	सब
लेश्यामा०	२	शुक्ललेया व लेश्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य अनुभव
सम्यक्त्वमा०	२	श्रौपषमिक व क्षायिक
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, अनुभव
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत
ध्यान	४०	शुक्ल ४ व रहित
आश्रव	१५	योग ११ कषाय ४ व आश्रवरहित
भाव	३३	श्रौ. २क्षा. ६ क्षायो. १२ श्रौद. ८ पारि. २
अवगाहना		३॥ हाथसे ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व अतीत

अनन्तानुबंधी क्रोध में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मि. सा.
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति व रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारक २ योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	स्त्री पु० न०
कषायमार्गणा	१३	अनंतान आदि ४ हास्यादि ६
ज्ञानमार्गणा	३	कु० कु० कु०
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु, अचक्षु
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मि० सा०
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	कमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	५५	आहारककाय योग व मिश्रइन २ बिना
भाव	३४	क्षायो. १० औद. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	घानगुल के असंख्यातर्वे भागसे १०००
योनि		योजन तक
कुल		८४ लाख
		१६७॥ लाख कोटि

(१०२)

अनन्तानुबंधो रहित अप्रत्याख्यानावरण क्रोध में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	यिश्च अववति सम्यक्त्व
जीवसमास	२	सं. पं. प. अ.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहितबिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	१३	आहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	१२	क्रोध ३ हा. ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	६	मनपर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	४	मि. सा. बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४६	योग २ कषाय ४ मि. ५ बिना
भाव	३६	श्री. १क्षा. १क्षायो. १५औद. २०पारि. २
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १००० योजन तक
योनि	—	३२ लाख
कुल	—	१० लाख

अनन्तानुबंधी रहित अप्रत्याख्यानवरण मान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिश्र अवर्ति सम्यक्त्व
जीवसमाप्त	२	सं. पं. प. अ.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
सज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१३	आहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	१२	मान ३ हा. ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	६	मनपयंय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असीयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	४	मि. सा. बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	प्रातः ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४६	योग २ कषाय ४ मि. ५ बिना
भाव	३६	श्री १क्षा. १क्षायो. १५श्रीव. २०पारि. २
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १००० मोजव तक
योनि	—	३२ लाख
कुल	—	१०६॥ लाख कोटि

अनन्तानुबंधी रहित अप्रत्याख्यानवरण माया में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	२	मिश्र अवरति सम्यक्त्व
जीवसमास	२	सं. पं. प. अ.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	१३	आहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	१२	माया ३ हा ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेख्यमा०	६	लेख्य रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	४	मि. सा. बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म २
अश्रव	४६	योग २ कषाय ४ मि. ५ बिना
भाव	३६	औ. १क्षा. १क्षायो. १५औद. २० पारि. २
अवगाहना	—	सख्यात घनांगुल से १००० योजन तक
योनि	—	३२ लाख
कुल	—	१०६॥ लाख कोटि

अनन्तानुबंधी रहित अप्रत्याख्यानावरण लोभ में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिश्र अवरति सम्यक्त्व
जीवसमाप्त	२	सं. पं. प. अ.
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१३	आहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत बिना
कषायमार्गणा	१२	लोभ ३ हा. ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	६	मनपर्यय केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	अस्तीयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	४	मि. सा. बिना
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१०	घातं ४ रौद्र ४ धर्म २
आश्रव	४६	योग २ कषाय ४ मि. ५ बिना
भाव	३६	श्री. १क्षा. १क्षायो. १५श्रीद. २०पारि. ३
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १०००योजन तक
योनि		३२ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

अनन्तानुबंधी व अप्रत्याख्यानावरण से रहित क्रोध में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१	देशविरत
जीवसमाख	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	मनुष्यगति व तिर्य्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	६	मन ४, बच० ४, प्री० १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री न०
कषायमार्गणा	११	क्रोध २ हा. ६ वेद ३
ज्ञानमार्गणा	३	मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान
संयममार्गणा	१	संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, श्रवक्षु श्रवधि दर्शन
लेख्यामा०	३	पीत पद्म शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	श्रौपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	११	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ३
आश्रव	३७	योग ६ कषाय १७ अविरति ११
भाव	३१	श्री १क्षा. १क्षायो. १३श्रीद. १४पारि. २
अवगाहना	—	संख्यात घनां. से १००० योजन तक
मोनि	—	१८ लाख
कुल	—	५५॥ लाख कोटि

(१०७)

अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरणरहित संज्वलनक्रोध में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	४	६ से ९ गुरुस्थान तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	११	म. ४ व. ४ औ. १ आहारक २
वेदमार्गणा	४	स्त्री. पु. नं. अपगत
कषायमार्गणा	१०	संज्वलन क्रोध १ हास्यादि ९
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति अथ. मन.
संयममार्गणा	३	सामायिक छेदोपस्थापना परिहार
दर्शनमा०	३	विशुद्धि
लेख्यामा०	३	केवल दर्शन विना
भव्यत्वमा०	१	पीत पद्म शुक्ल लेख्या
सम्यक्त्वमा०	३	भव्य
संज्ञित्वमा०	१	औपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक
आहारकमा०	१	सम्यक्त्व
उपयोग	२	संज्ञी
ध्यान	८	आहारक
आश्रव	२४	कमशः
भाव	२८	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल १
अवगाहना	—	कषाय १३ योग ११
योनि	—	औ. २ क्षा. २ क्षायो. १४ औद. ८ पारि. २
कुल	—	३॥ हाथ से ५२५ वनस्प तक
		१४ लाख
		१२ लाख कोटि

अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरण रहित संज्वलनमानमें

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	६ से ६ गुणस्थान तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	म. ४ व. ४ औ. १ आहारक २
वेदमार्गणा	४	स्त्री. पु. नं. अपगत
कषायमार्गणा	१०	संज्वलन मान १ हास्यादि ६
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति, अव. मन.
संयममार्गणा	३	सामायिक छेदोपस्थापना परिहार- बिशुद्धि
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेख्यामा०	३	पीत पद्म शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	श्रोपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रय	२४	कषाय १३ योग ११
भाव	२८	औ. २क्षा. २क्षायो. १४ औद. ८ पारि. २
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१३ लाख कोटि

(१०६)

अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरणरहित संज्वलनमायामें

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	६ स ६ गुणस्थान तक
जीवसमास	२	संज्ञो पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	११	म. ४ व. ४ औ. १ आहारक २
वेदमार्गणा	४	स्त्री० पु० नं० अपगत
कषायमार्गणा	१०	संज्वलन माया १ हास्यादि ६
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति अब. मन.
संयममार्गणा	३	सामायिक छेदोपस्थापना परिहार- विशुद्धि
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेख्यामा०	३	पीत पद्म शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	श्रौपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	२४	कषाय १३ योग ११
भाव	२८	औ. २ क्षा. २ क्षायो. १४ औद. ८ पारि. २
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१२ लाख कोटि

(११०)

अतन्तान्बंधी अप्रत्याख्यानावरण व प्रत्याख्यानावरण से रहित संज्वलन
लोभ में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	५	६ सं० १० गुणस्थान
जीवसमास	२	संज्ञी मंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	११	मन. ४ वचन ४ औ. १ आहा. २
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	१०	संज्वलन लोभ १ हास्यादि ६
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति अव० मन० पर्ययज्ञान
संयममार्गणा	४	सामा. छेदोप. परिहार सूक्ष्मसापराय
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक क्षायिक व क्षायोपशमिक
संशित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ३ धर्म० ४ पृथक्त्व० १
आश्रव	२४	कषाय १३ योग ११
भाव	२८	औ. २क्षा. २ क्षायो. १४ औद. ८ पारि. २
अवगाहना		३॥ हाथसे ५२५ घनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

हास्यरति में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	१ से ८ गुणस्थान तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमागणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	अपगत वेद बिना
कषायमार्गणा	२३	कषाय १६ हा० र० भ० जु० वेद ३
ज्ञानमार्गणा	७	केवल-ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	सामा. छेदो. परि. असंयम, संयमासंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आ० ४, री० ४ धर्म ४, शुक्ल १
आश्रव	५७	सब
भाव	४६	श्री. २क्षा. २क्षायो. १८ श्रीद. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	घनांगुलके असं. भागसे १००० भोजनतक
मोनि	—	८४ लाख
कुल	—	१६७॥ लाख कोटि

अरति शोक में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	१ से ८ गुणस्थान तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	अपगतवेद बिना
कषायमार्गणा	२३	कषाय १६ अ०शो०भ०जु० वेद ३
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	सामा.छेदो.परि. असंयम संयमासंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्यत्व अभव्यत्व
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आ० ४ रौ० ४ धर्म४ शुक्ल १
आश्रव	५७	सब
भाव	४६	श्री.२क्षा.२क्षायो.१८ श्रीद.२१पारि.३
अवगाहना	—	धनां. के असं. भागसे१०००योजनतक
योनि	—	८४ लाख
कुल	—	१६७।१ लाख कोटि

भय जुगुप्सा में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	मिथ्यात्व से अपूर्णकरण तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गगा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गगा	६	काय रहित बिना
योगमार्गगा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गगा	३	अपगतवेद बिना
कषायमार्गगा	२५	कषाय रहित बिना सब
ज्ञानमार्गगा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गगा	५	सामा.छेदो.परि. असंयम संयमासंयम
दर्शनमा०	३	केवल दर्शन बिना
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्यत्व अभव्यत्व
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	५७	सब
भाव	४६	श्रौ. २क्षा. २क्षायो. १८ श्रौद. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	घनां. के असं. भागसे १००० योजन तक
योनि	—	८४ लाख
कुल	—	१६७॥ लाख कोटि

अकषाय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	११ से १४ गुणस्थान व अतीत
जीवसमास	२	सं० पं० प० अ० व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१०	सब व अतीत
संज्ञा	—	संज्ञा रहित (अतीत)
गतिमार्गणा	२	मनुष्य व गतिरहित
इन्द्रियजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	२	असकाय व काय रहित
योगमार्गणा	१२	मन४वचन४ औ० २ कार्माण १ व अयोग
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	५	३ कुज्ञान नहीं
संयममार्गणा	२	यथाख्यात चारित्र्य व तीनों से रहित
दर्शनमा०	४	सब
लेख्यामा०	२	शुक्ल लेख्या व लेख्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य व अनुभव
सम्यक्त्वमा०	२	औ० शमिक व क्षायिक
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी व अनुभव
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	कमशः व युगपत्
ध्यान	४	शुक्ल ध्यान ४ व अतीत
आश्रय	११	योग ११ व अतीत
भाव	३०	औ० २क्षा. ६ क्षायो. १२ औ० ५ पारि. २
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ घनुष
योनि	—	१४ लाख व जाति व अतीत
कुल	—	१२ लाख कोटि व कुल व अतीत

(११५)

कुमति कुश्रुत ज्ञान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	३	मि० सा० सम्यग्मिध्यात्वं
जीवसमाप्त	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारक व अयोग बिना
वेदमार्गणा	३	अप्रगत वेद बिना
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	१, ३	कुमति या कुश्रुत (ब्रह्म से २ या ३ भाव में भी)
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु, अचक्षु दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	३	मि० सासादन सम्यग्मिध्यात्वं
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	कर्मशः
ध्यान	५	आर्त ४ रौद्र ४
आश्रव	५५	आहारक २ योग बिना
भाव	३२	क्षायो. ८ श्रौद. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	घनांगुलके असं. भागसे १००० योजन तक
योनि	—	८४ लाख
कुल	—	१६७१ लाख काटि

कुश्रवधि ज्ञान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	३	मिथ्यात्व, सासादन, मय्यग्निमध्यात्व
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ति
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१०	मन ४ वचन ४ औद. १ वैक्रियक १
वेदमार्गणा	३	अपगत वेद बिना
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३, १	कुश्रवधि (लब्धिसे तीनों कु.भावमें भी)
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	३	मि. सा. मिश्र
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	मार्त ४ रौद्र ४
आश्रव	५२	योग ५ बिना
भाव	३२	क्षायो. ८ औद. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

मतिज्ञान श्रुतज्ञान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	६	६ से १२ गुणस्थान तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२१	अनंतानुबंधी ४ व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	१	मतिज्ञान या श्रुतज्ञान (लब्धि से २ या ३ या ४ भाव में भी)
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपक्षमिक क्षायिक व क्षायोपक्षमिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक व अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	अंतिम २ शुक्ल ध्यान बिना
आश्रव	४८	कषाय ४ मि० ५ बिना
भाव	३८	अ०. २क्षा. २क्षायो. १२ अ०द. २० पारि. २
अवगाहना	—	संख्यात घनांगुल से १००० योजन तक
योनि	—	२६ लाख
कुल	—	१०६॥ लाख कोटि

अवधिज्ञान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त-विवरण
गुरुस्थान	६	४ से १२
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व रहित
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२१	अनंतानुबन्धी ४ व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	१	अवधिज्ञान (लब्धिसे ३५४ भावमें भी)
सयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यमा०	६	अलेख्य बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	श्रौपशमिक क्षायोप-क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	अंतिम २ शुक्ल ध्यान बिना
माश्रव	४८	अविरति १२ कषाय २१ योग १५
भाव	३८	श्री. २क्षा. २क्षायो. १२ श्रीद. २० पारि. २
अवगाहना	+	संख्यात घनांगुल से १००० योजनतक
योनि	+	२६ लाख
कुल	+	१०६० लाख कोटि

मनःपर्यय ज्ञान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	७	६ से १२
जीवसमास	१	संज्ञो पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	६	मन ४ वच ४ औ १
वेदमार्गणा	२	पुरुषवेद व अपगतवेद
कषायमार्गणा	११	संज्ञलन ४ हा. ६ पुरुषवेद १
ज्ञानमार्गणा	१	मन पर्ययज्ञान (लब्धिसे ४ भावमें भी)
संयममार्गणा	४	सामा. छेदो. सूक्ष्मसांपराय यथाख्यात चारित्र
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	३	पीत पद्म शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	द्वितीयोपशम. क्षायो. क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	६	आर्त ३ धर्म ४ शुक्ल २
आश्रय	२०	योग ६ कषाय ११
भाव	२८	औ. २ क्षा. २ क्षायो. ११ औद. ११ पारि. २
अवगाहता	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

केवलज्ञान में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	सयोग केवली, आयोग केवली
जीवसमास	२	सं पं प, अ०, व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	४	वचनबल, कायबल, श्वा० प्रायु
संज्ञा	०	अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्यगति व गति रहित
इन्द्रियजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	२	असकाय व काय रहित
योगमार्गणा	१८	मन२ वचन२ औदा.२ कार्मा. व अयोग
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यात य तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेख्यामा०	२	शुक्ल लेख्या व लेख्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अनुभव
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभव
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	२	अंतिम २ शुक्ल ध्यान व अतीत
आश्रव	७	योग ७ व अतीत
भाव	१४	क्षायिक ६ औदयिक ३ पारिष्ठा. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ वनुष
योनि		१४ लाख व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व अतीत

सामायिक व छेदोपस्थापना संयम में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	४	६ से ६
जीवममास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राग	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गगा	१	मनुष्यगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गगा	१	त्रसकाय
योगमार्गगा	११	मन ४ वचन ४ औ १ आहा. २
वेदमार्गगा	४	सब
कषायमार्गगा	१३	संज्वलन ४ हास्यादि० ६
ज्ञानमार्गगा	४	मति श्रुति श्रव० मनःपर्ययज्ञान
संयममार्गगा	२, १	सामायिक, छेदोपस्थापना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु श्रवधि दर्शन
लेश्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ललेश्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक, क्षायोपशमिक क्षामिक
संज्ञित्वमा०	१	सम्यक्त्व
आहारकमा०	१	संज्ञी
उपयोग	२	आहारक
ध्यान	२	क्रमशः
आश्रव	२४	आर्त ३ धर्म ४ वृक्ल १ पृथक्त्ववितर्क.
भात्र	३३	योग ११ कषाय १३
अवगाहना	—	औ. २ क्षा. २ क्षायो. १४ औद. १३ पारि. २
योनि	—	३॥ हाथ से ५२५ धनुष तक
कुल	—	१४ लाख
		१२ लाख कोटि

परिहारविमुद्धि में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	२	प्रमत्तविरत अप्रमत्तविरत
जीवसमास पर्याप्ति	१ ६	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	६	मन ४ वच० ४, औ० १
वेदमार्गणा	१	पुरुषवेद
कषायमार्गणा	११	सज्ज्वल ४ हास्यादि ७
ज्ञानमार्गणा	३	मति श्रुति अवधिज्ञान
संयममार्गणा	१	परिहार विमुद्धि
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	३	गीत पद्य शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	क्षायोपशमिक, क्षायिक
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	७	आर्त ३ धर्म ४
आश्रव	२०	योग ६ कषाय ११
भाव	२७	क्षा. १ क्षायो. १३ औद. ११ पारि. २
अवगाहना	—	३॥ हाथ से ५२५ वनुष
योनि	—	१४ लाख
कुल	—	१२ लाख कोटि

सूक्ष्मसाम्पराय संयम से

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान-	१	सूक्ष्म साम्पराय
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	प्राण
संज्ञा	१	परिग्रह
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमागणा	६	मन ४ वचन० श्री० १
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	संज्वलन सूक्ष्म लोभ
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्ययज्ञान
संयममार्गणा	१	सूक्ष्म साम्पराय
दर्शनमा०	३	चक्षु, श्रवक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	१	शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	श्रीपशमिक आयिक, सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१	पृथक् बितर्क विचार
आश्रव	१०	योग ६ कषाय १
भाव	२३	श्री. २क्षा. २क्षायो. १२श्रीद. ५पारि. ९
अवगाहना	+	३॥ हाथ से ५२५ घण्टा तक
योनि	+	१४ लाख
कुल	०	१२ लाख कोटि

यथाख्यातसंयम में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	४	११ से १४ गुरुस्थान तक
जीवसमाप्त	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	१	अतीत
गतिमार्गणा	१	मनुष्य गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	वसकाय
योगमार्गणा	१२	मन४ वच.४ औदा.२ का. १, अयोग१
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	५	३ कुज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	यथाख्यातसंयम
दर्शनमा०	४	सब
लेख्यामा०	२	शुक्ल लेख्या व लेख्या रहित
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	२	औपशमिक व क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	कमशः व युगपत्
ध्यान	४	शुक्ल ४
आश्रव	११	योग ११
भाव	२६	औ.२का.६ क्षायो.१२औव.४ पारि.२
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ अनुष
योनि		१४ लाख
कुल		१२ लाख कोटि

असंयम में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मिथ्यात्व, सा. मिश्र, अविरत सम्यक्त्व
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रियरहित बिना
कायमार्गणा	६	कायरहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारक २ बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्यय केवलज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अबधि दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२, १०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ४ (मुख्यतया २)
आश्रव	५५	आहारक योग २ बिना
भाव	४१	श्रौ. १क्षा. १क्षायो. १५ श्रौद. २१ पारि. ३
अवगाहना	—	घनांगुलके असख्यातर्वे भागसे १०००
योनि		योजन तक
कुल		८४ लाख
		१६७॥ लाख कोटि

संयमासंयम में

स्थान	म. पान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	१	देशविरत
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	मब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	२	मनुष्यगति व तिर्यच गति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	६	मन० ४ वच० ४ औ. १
वेदमार्गणा	३	स्त्री पु० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	१७	अननानुबन्धी ४ अग्रत्या. ४ व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३	मति श्रुत अवधिज्ञान
संयममार्गणा	१	संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
लेख्यामा०	३	पीत, पद्म, शुक्ल लेख्या
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	३	औःशमिक क्षयोप-क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२, ११	आर्त ४ रौद्र ४ घर्म ४ (मुख्यतया ३)
आश्रव	३७	अविरति ११ कषाय १७ योग ६
भाव	३१	औ. १ क्षा. १ क्षायो. १३ औद. १४ पा. २
अवगाहना	—	संख्यात घनां. से १००० योजन तक
योनि	—	१८ लाख
कुल	—	५५॥ लाख कोटि

संयम असंयम संयमासंयम इन तीनों से रहित में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	×	अतीत
जीवसमास	×	अतीत
पर्याप्ति	×	अतीत
प्राण	×	अतीत
संज्ञा	×	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेख्यामा०	१	लेख्या रहित
अव्यक्तवमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	आयिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	×	अतीत
आश्रव	×	आश्रव रहित
भाव	५	आयिक ४ (ज्ञा.व. आयिक सं. वीर्य)
अवगाहता	—	जीवत्वया १
योनि	×	३॥ हाथ से ५२५ अनुष
कुल	×	अतीत

चक्षुर्दर्शन में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	१ से १२ गुणस्थान तक
जीवसमास	६	चौद्विन्द्रिय के २ पंचेन्द्रिय के ४
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातमार्गणा	२	चतुरिन्द्रिय व पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
सयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	१	चक्षु दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्यारहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	अंतिम २ शुक्ल ध्यान बिना
आश्रव	५७	सब
भाव	४४	श्रौ. २क्षा. २क्षायो. १६ श्रौद. २१ पारि. ३
अवगाहना		असंख्यगुणित घनांगुल संख्यात भाग
योनि		से १००० योजन तक
कुल		२८ लाख
		११५॥ लाख कोटि

अचक्षुर्दर्शन में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१२	१ से १२ गुणस्थान तक
जीवसमाप्त	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातमार्गणा	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२५	कषाय रहित बिना
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
सयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	१	अचक्षु दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	अंतिम २ शुक्ल ध्यान बिना
आश्रव	५७	सब
भाव	४४	श्री.२क्षा.२क्षायो. १६श्रीव.२१ पारि. ३
अवगाहना	—	घनांगुल के असंख्यातवें भागसे १०००
योनि		योजन तक
कुल		८४ लाख
		१६७॥ लाख कोटि

अवधिदर्शन में

स्थान	सामान्या- लाप	मक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	६	अविरत सम्यक्त्व से क्षीणमोह तक
जीवसमाप्त	२	पंचेन्द्रिय पश्यान् व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राप्त	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुबंधी ४ अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्ययज्ञान
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	१	अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भब्यत्वमा०	१	भब्य
सम्यक्त्वमा०	३	औपशमिक, क्षायोपशमिक व क्षात्रिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	अंतिम २ शुक्लध्यान बिना
आश्रय	४८	कषाय ४ मि० ५ बिना
भाव	४१	औ० २क्षा. २क्षायो. १५ औद. २० पारि. २
अवगाहना		संख्यात अंगुल से १००० योजन तक
गोति		२६ लाख
कुल		१० लाख लाख कोटि

(१३१)

केवलदर्शन में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	सयोगकेवली, अयोगकेवली व अतीत
जीवसमाप्त	२	संज्ञी पं. पर्याप्त, अपर्याप्त व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	४	कायवल वचनवल श्वासोच्छ्वास प्राण व अतीत
संज्ञा	+	अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्यगति व गति रहित
इन्द्रियजातिमार्गणा	२	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	२	असकाय व अकाय
योगमार्गणा	८	मन २ वचन २ श्रौदा. २ कार्मा. १ व आयोच
वेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यात संयम व तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेख्यामा०	२	शुक्ल लेख्या व लेख्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	आयिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	२	अन्तिम शुक्लध्यान २ व अतीत
आश्रय	७	योग ७ व आस्रवातीत
भाव	१४	आ. ६ श्रौद. ३ पारि. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ वनुष तक
योनि		१४ लाख व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व अतीत

कृष्ण लेख्या में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	मिथ्यात्व से अविरत सम्यक्त्वगुण तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारक २ व अयोग बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुं० सकवेद
कषायमार्गणा	२५	कषाय रहित बिना
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्यय व केवलज्ञान बिना
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	१	कृष्णलेख्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	कर्मशः
ध्यान	१२, १०	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ४ (मुख्यतया २)
आश्रव	५५	आहारक २ योग बिना
भाव	३६	श्री. १क्षा. १ क्षायो. १५ औद. १६ पा. ३
अवगाहना	—	घनांगुल के असख्यातवें भागसे १००० योजन तक
योनि		८० लाख
कुल		१७१॥ लाख कोटि

पीतलेश्या में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	७	मिथ्यात्व से अप्रत्यक्षविरत गुण तक
जीवसमास	२	संज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	३	मनुष्यगति व तिर्यच गति व देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	यथाख्यात व तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
लेश्यामा०	१	पीत लेश्य
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२	शुक्ल ४ बिना
आश्रव	५७	सब
भाव	३८	श्री.१ क्षा.१ क्षायो.१८श्रीद.१५पारि.३
अवगाहना	—	सं. घनां. से १००० योजन तक
योनि		८२ लाख
कुल		८१॥ लाख कोटि

पद्मलेश्या में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	७	१-७
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	३	मनुष्यगति तिर्यङ्गगति व देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
संयममार्गणा	५	यथा० व तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	१	पद्म, लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२	४ शुक्लध्यान बिना
आश्रव	५७	सब
भाव	३८	श्री. १ क्षा. १ क्षायो. १८ आद. १५ पा. ३
अवगाहना	—	सं. घनां. से १००० योजन तक
योनि		२२ लाख
कुल		८११ लाख फेदि

शुक्ललेश्या में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१३	मिथ्यात्व से सयोगकेवली तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	३	मनुष्यगति तिर्य्यचगति व देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय जाति
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	अ.सं.संयमासंयम तीनोंसे रहित बिना
दर्शना०	४	सब
लेश्यामा०	१	शुक्ल लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी व अनुभव
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१५	व्युपरत क्रिया या निवृत्ति बिना
आश्रय	५७	सब व अतीत
भाव	४७	श्री. २क्षा. ६क्षायो. १८श्रीद. १५पारि. ३
अवगाहना	—	सं. घनां. से १००० योजन तक
धोनि	—	२२ लाख
कुल	—	८१॥ लाख कोटि

अलेख्या में

स्थान	सामान्या- भाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	१	१४ व अतीत
जीवसमास	१	सं, पं. पर्याप्त व अतीत
पर्याप्त	६	सब व अतीत
प्राण	१	आयु य अतीत
संज्ञा	X	अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्य गति व गतिरहित
द्विजजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय जाति व अतीत
कायमार्गणा	२	त्रसकाय व कायराहित
योगमार्गणा	१	योग रहित (अयोग)
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय (कषाय रहित)
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	२	यथाख्यात व अ.सं. संयमासंयम रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेख्यमा०	१	लेख्यरहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अनुभव
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभव
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	१	व्युपेतक्रिया निवृत्ति व अतीत
आश्रव	+	अतीत
भाव	१३	क्षायिक. १ औदयिक २ पारि. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ घनुष
योनि		१४ लाख व अतीत
कुल		१२ लाख कोटि व अतीत

भव्यत्व से

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	१४	सब (मिथ्यात्व से अयोगकेवली तक)
जीवसमाप्त	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेख्यामा०	७	सब
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	संज्ञी, असंज्ञी, अनुभव
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपद्
ध्यान	१६	सब
आश्रव	५७	सब
भाव	५३	सब
अवगाहना	—	घनांगुल के असंख्यातवें भागसे १००० योजन
योनि		८४ लाख
कुल		१६७॥ लाख कोटि

अभव्यत्व में

स्थान	सामान्या- लाप	सक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	१	मिथ्यात्व
जीवसमाह	१४	सब
वर्षाप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१३	आहारकाय २ व अयोम बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
आनमार्गणा	३	कुमति कुश्रुति कुअवधि
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	अक्षु दर्शन अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
अव्यक्तमा०	१	अभव्य
सम्यक्त्वमा०	१	मिथ्यात्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी, असंज्ञी
आहारकमा०	२	सब
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४,
आश्रव	१५	आहारक काय योग २ बिना
भाव	३३	आयो. १० औदयिक ३१ पारि. २
अवगह्नी	—	बर्णागुल अस.भा.से १०००योजन तक
योनि	—	८४ लाख
कुल	—	११७॥ लाख कोटि

(१३६)

भव्यत्वमार्गणा के अनुभय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	०	अतीत
जीवसमाप्त	०	अतीत
पर्याप्ति	०	अतीत
प्राण	०	अतीत
सज्ञा	०	अतीत
गतिमार्गणा	१	गति रहित
इन्द्रियजातिमा०	१	इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	१	काय रहित
योगमार्गणा	१	योग रहित
बेदमार्गणा	१	अपगतवेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
संयममार्गणा	१	तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेख्यामा०	१	लेख्या रहित
भव्यत्वमा०	१	अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	आधिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	०	अतीत
आश्रय	०	मात्सर्य रहित
भाव	५	आधिक भाव ४ पारिणामिक १
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ अनुष
योनि	०	+ अतीत
कुल	०	× अतीत

प्रथमोपशम सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	अविरत सम्यक्त्व से अप्रमत्तविरत तक
जीवसमास	१	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१०	मन ४, वच. ४, औ. १ वै. १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री नपु० सकवेद
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुबंधी ४ व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	३	मति श्रुत अवधिज्ञान
संयममार्गणा	४	सामा. छेदो. असंयम संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	प्रथमोपशम सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२	४ शुक्ल ध्यान बिना
आश्रव	४३	अविरति १२ कषाय २१ योग १०
भाव	३६	औ. १ क्षायो. १३ औद. २० पारि. २
अवगाहना	—	संख्यात घनां. से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	४ स ११ अवि. से उपशान्तमोह तक
जीवसमास	२	सं पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	मब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	२३	मनुष्यगति, देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	असकाय
योगमार्गणा	११	मन.४ वच.४ औ१ वैमि. १ का. १
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२२	अनन्तानुबन्धी४ व कषायरहित बिना
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुत, अवधि, मन.पर्यय
संयममार्गणा	६	परिहारवशुद्धि व अन्तिम बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	द्वितीयोपशम सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आतं ४, रौद्र ४ घर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	४४	अविरति १२ कषाय २१ योग ११
भाव	३५	औ.२ क्षायो.१५ औद.१८ पारि.२
अवगाहना	—	१ हाथ से ५२५ घनुष तक
योनि	—	१८ लाख
कुल	—	३८ लाख कोटि

श्रौपशमिक सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	८	४ से ११
जीवसमाप्त	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	नारक, तिर्यंच, मनुष्य, देवगति
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१२	मनः वचन ४ श्रौ.१ वै.२ का. १
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२२	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
ज्ञानमार्गणा	४	मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय
संयममार्गणा	६	परिहारविशुद्धि व अंतिम बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु, अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०!	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०!	१	श्रौपशमिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१३	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ४ शुक्ल १
आश्रव	४५	योग १२ कषाय २१ अविरति १२
भाव	३८	श्रौ.२ क्षायो.१४ औद.२० पारि.२
अवगाहना	—	सं. घनांगुल से १००० योजन तक
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	४	४ से ७ अवि. अप्रमत्तविरत तक
जीवसमास	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपु० सकवेद
कषायमार्गणा	२१	अनन्तानुबन्धी ४ व अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	४	मति श्रुति अवधि मनःपर्ययज्ञान
संयममार्गणा	५	सामा. छेदो. परि. असंयम, संयमासंयम
दर्शनमा०	३	चक्षु अवचक्षु अवधि दर्शन
लेश्यामा०	६	लेश्यारहित बिना
भव्यत्वमा०	१	भव्य
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायोपशमिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१२	आर्त ४ रौद्र ४ धर्म ४
आश्रव	४८	अविरति १२ कषाय २१ योग १५
भाव	३७	क्षायो. १५ औद. २० पारि. २
अवगाहना	—	संख्यात घनां. से १००० योजन तक
मोति	—	२६ लाख
कुल	—	१०६१ लाख कोटि

क्षाधिक सम्यक्त्व मे

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	११	४ से १४ व अतीत
जीवसमास	२	संज्ञी पंचे. प. अ. व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	१०	सब व अतीत
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	५	सब
इन्द्रियजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	२	त्रसकाय व कायराहत
योगमार्गणा	१६	सब
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२२	अनन्तानुबंधी ४ रहित
ज्ञानमार्गणा	५	मति, श्रुति, अविद्य, मनःपर्यय केवल
सयममार्गणा	८	सब
दर्शनमा०	४	सब
लेख्यामा०	७	मब
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अनुभव
सम्यक्त्वमा०	१	क्षाधिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	२	संज्ञी अनुभव
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान!	१६	सब
आश्रय	४८	अविरति १२ कषाय २१ योग १५
भाव	४६	श्री. १क्षा. ६आयो. १४श्रीद. २० पारि. २
अवगाहना	—	१ हाथ से ३ कोश तक
योनि		
कुल		

संज्ञित्व में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थानं	१२	१ से १२ मिथ्यात्व से क्षीणमोह तक
जीवसमाप्त	२	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमार्गणा	१	पंचेन्द्रिय
कायमार्गणा	१	त्रसकाय
योगमार्गणा	१५	योग रहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	७	केवल ज्ञान बिना
सयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	३	चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य-अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	१	संज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	१४	शुक्ल २ बिना
आश्रव	५७	रूप
भाव	४६	क्षायिक ७ बिना
अवगाहना	—	सं.घ. से १००० योजन तक संमू.घ.अ.
योनि		२६ लाख
कुल		१०६॥ लाख कोटि

असंज्ञित्व में

स्थान	सामान्य- लाप	सक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	मिथ्यात्व, सासादन सम्यक्त्व
जीवसमाप्त	१२	संज्ञी पं० पर्याप्त व अपर्याप्त बिना
पर्याप्ति	५	मन बिना
प्राण	६	मनोबल बिना
संज्ञा	४	सब
गतिमार्गणा	१	तिर्य्यचगति
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	४	अनुभय वचन योग १ औ. २ कामाणि १
वेदमार्गणा	३	पु० स्त्री० नपुंसकवेद
कषायमार्गणा	२५	अकषाय बिना
ज्ञानमार्गणा	२	कुमति कुश्रुति
संयममार्गणा	१	असंयम
दर्शनमा०	२	चक्षु अचक्षु दर्शन
लेश्यामा०	३	कृष्ण नील कापोत लेश्या
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	२	मिथ्यात्व सासादन सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	असंज्ञी
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः
ध्यान	८	आर्त ४ रौद्र ४,
आश्रव	४५	मि. ५ अविरति ११ कषाय २५ योग ४
भाव	२७	क्षायो. ६ औद. १५ पारि. ३
अवगाहना	—	धनांगुल के असंख्यातवें भागसे १०००
योनिय		योजन तक
कुल		६२ लाख
		१३४॥ लाख कोटि

संज्ञित्वमार्गणा के अनुभय में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	२	सयोग के., अयोगकेवली व अतीत
जीवसमाप्त	२	संज्ञी पं. पर्याप्त, अ. व अतीत
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राण	४	वचनबल, का. स्वा. आयु/व अतीत
संज्ञा	X	अतीत
गतिमार्गणा	२	मनुष्य गति व गतिरहित
इन्द्रियजातिमा०	२	पंचेन्द्रिय व इन्द्रिय रहित
कायमार्गणा	२	असकाय व कायरहित
योगमार्गणा	८	सन २ वचन २ औ. २ का. १ व अयोग
वेदमार्गणा	१	अपगत वेद
कषायमार्गणा	१	अकषाय
ज्ञानमार्गणा	१	केवल ज्ञान
सयममार्गणा	२	यथाख्यातचारित्र्य व तीनों से रहित
दर्शनमा०	१	केवल दर्शन
लेख्यामा०	२	शुक्ल लेख्या व लेख्या रहित
भव्यत्वमा०	२	भव्य, अनुभय
सम्यक्त्वमा०	१	क्षायिक सम्यक्त्व
संज्ञित्वमा०	१	अनुभय
आहारकमा०	२	आहारक अनाहारक
उपयोग	२	युगपत्
ध्यान	२	शुक्लध्यान २/व अतीत
आश्रव	७	योग ७ व अतीत
भाव	१४	क्षायिक ६ औद. ३ पारि. २
अवगाहना		३॥ हाथ से ५२५ षण्णु तक
योनि		१४ लाख व X
कुल		१२ लाख कोटि व X

(१४८)

आहारक में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुरुस्थान	१३	१ स १३ मि० से सयोगकेवली तक
जीवसमास	१४	सब
पर्याप्ति	६	सब
प्राण	१०	सब
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	४	गति रहित बिना
इन्द्रियजातिमा०	५	इन्द्रिय रहित बिना
कायमार्गणा	६	काय रहित बिना
योगमार्गणा	१४	कार्माणकाययोग व योगरहित बिना
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	८	सब
संयममार्गणा	७	तीनों से रहित बिना
दर्शनमा०	४	सब
लेख्यामा०	६	लेख्या रहित बिना
भव्यत्वमा०	२	भव्य अभव्य
सम्यक्त्वमा०	६	सब
संज्ञित्वमा०	३	संज्ञी, असंज्ञी व अनुभव
आहारकमा०	१	आहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१५	व्युपरत क्रिया निवृत्ति बिना
आश्रव	५६	कार्माण योग बिना
भाव	५३	सब
अवगाहना	—	घनों. के असंख्यातवें भाग से १००० योजन तक
योनि		८४ लाख कोटि
कुल		८४ लाख कोटि

अनाहारक में

स्थान	सामान्या- लाप	संक्षिप्त विवरण
गुणस्थान	५	१, २, ४, १३, १४, १०
जीवममास	८	अपर्याप्त ७ प १
पर्याप्ति	६	सब व अतीत
प्राग	७	मन. वचन. श्वास बिना/व अतीत
संज्ञा	४	सब व अतीत
गतिमार्गणा	५	सब
इन्द्रियजातिमा०	६	सब
कायमार्गणा	७	सब
योगमार्गणा	१	कार्माणकाययोग व योग रहित
वेदमार्गणा	४	सब
कषायमार्गणा	२६	सब
ज्ञानमार्गणा	६	मनःपर्यय व कुअवधि ज्ञान बिना
संयममार्गणा	३	असंयम, यथाख्यात तीनों से रहित
दर्शनमा०	४	सब
लेख्यामा०	७	सब
भव्यत्वमा०	३	भव्य अभव्य अनुभव
सम्यक्त्वमा०	४	सम्यग्मिध्यात्व बिना
संज्ञित्वमा०	३	सब
आहारकमा०	१	अनाहारक
उपयोग	२	क्रमशः व युगपत्
ध्यान	१४, १२	आर्त ४ रौद्र ४ चर्म ४ शुक्ल २
आश्रव	४३	योग १४ बिना
भाव	४८	श्री.१क्षा.६ कायो.१४ श्रीद.२१ पा.३
अवगाहना	+	घनां. असं. से १००० योजन पर्यंत
योनि	+	८४ लाख व अतीत
कुल		१६७॥ लाख कोटि व अतीत

धर्मप्रेमी बन्धुवों !

<http://sahjanandvarnishashtra.org/>

यदि आप सरल उपायों से आध्यात्मिक ज्ञान विज्ञान व शान्ति चाहते हैं तो अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्यश्री क्षु० १०५ मनोहर जी वर्गी सहजानन्द महाराज के रचित व प्रवचन ग्रन्थों का स्वाध्याय अवश्य कीजिये ।

प्रकाशित अप्रकाशित छोटे बड़े इन समस्त ग्रन्थों का नाम सहजानन्द साहित्य सेट है जो अध्यात्मग्रन्थ सेट, प्रवचनशीर्ष सेट, अध्यात्मप्रवचन सेट, दार्शनिक सेट, विज्ञान सेट व विद्या सेट इन छह सेटों में विभक्त है । ये ग्रन्थ आपके पास न हों तो स्वाध्याय करने करने के अर्थ मंगा लीजिये । पूर्ण सेट मंगाने के लिये स्टेशन का नाम लिखें, क्योंकि एक-एक प्रकार की एक एक पुस्तक रखने पर पार्सल का वजन इस समय ३५ किलो हो जाता है । आगे और भी वजन बढ़ जायेगा । सदस्य बनने पर अब तक के ग्रन्थ जितने प्रकाशित उपलब्ध हैं वे सब भेंट भेजे जा है तथा आगे जो छपते रहेंगे, वे भी भेंट आते रहेंगे ।

अध्यात्मग्रन्थ सेट—इसमें आत्म संबोधन सहजानन्द गीता आदि १२६ ग्रन्थ हैं जिनमें अब तक करीब आधे प्रकाशित हो गये हैं ।

प्रवचनशीर्ष सेट—इसमें प्रवचन ग्रन्थों के शीर्षों का संग्रह है करीब छोटे-बड़े ७७ ग्रन्थ हैं जो अभी तक प्रकाशित नहीं है, प्रकाशित होने वाले हैं ।

अध्यात्म प्रवचन सेट—इसमें धर्म प्रवचन, प्रवचन सार, प्रवचन भाग, संयमसार प्रवचन आदि छोटे-बड़े सब करीब २०८ पुस्तकें हैं ।

दार्शनिक सेट—इसमें अष्टसहस्री प्रवचन भाग प्रमेयकमलमर्तण्ड प्रवचन भाग आदि छोटे बड़े सब ग्रन्थ करीब ६० हैं ।

विद्या सेट—इसमें प्रारंभिक ज्ञान के लिये, व विद्यार्थियों के लायक करीब २५ पुस्तकें हैं ।

विज्ञान सेट—इसमें धर्म संबंधित विविध विषयों पर करीब ३५ पुस्तकें हैं ।

विशेष यदि द्रव्य देकर ही ग्रन्थ लेना चाहें तो पूरा स० साहित्य सेट लेने पर उनकी जागत पर ४० प्रतिशत कमीशन दिया जावेगा । कम सेट लेने पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जावेगा । सस्था का सदस्य बनने पर सर्व पुस्तकें भेंट दी जाती है व वर्गी प्रवचन मासिक भेंट दिया जाता है ।

पता—मंत्री सहजानन्द शास्त्रमाला
१८५-ए रणजीतपुरी सदर मेरठ (उ० प्र०)

परमात्म आरती

<http://www.jainkosh.org>

(प्रत्येक धार्मिक शिक्षालयों में-सामूहिक प्रार्थना के लिये)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः,

एगो अरिहंताणं, एगो सिद्धाणं, एगो आइरियाणं ।
एगो उवड्झायाणं, एगो लोए सब्ब साहूणं ॥

ॐ जय जय अविकारी ।

जय जय अविकारी, स्वामी जय जय अविकारी ।
हितकारी भयहारी, शाश्वत स्वविहारी । ॐ ॥ टेक ॥

काम क्रोध मद लोभ न मावा, समरस सुखधारी ।
ध्यान तुम्हारा पावन, सकल क्लेशहारी । ॐ ॥१॥

हे स्वभावमय -जिन तुम चीना, भव संतति टारी ।
तुव भूलत भव भटकत, सहत विपति भारी । ॐ ॥२॥

परसंबंध बंध दुख कारण, करत अहित भारी ।
परम ब्रह्मका दर्शन, चहुंगति दुखहारी । ॐ ॥३॥

ज्ञानमूर्ति हे सत्य सनातन, मुनि मन संचारी ।
निर्विकल्प शिवनायक, शुचि गुन भंडारी । ॐ ॥४॥

बसो बसो हे सहज ज्ञानधन, सहज शान्तिचारी ।
टलें टलें सब पातक, परबल बलधारी । ॐ ॥५॥

Version 1